Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 42 अंक-46
कल्पादि सम्वत् 1972949118

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 30 जनवरी से 05 फरवरी 2019 तक
माघ कृष्ण दशमी से माघ शुक्ल एकम् 2075 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

संयम की शुरूआत... पृष्ठ- 2

मेंवे करेंगे सेहत... पृष्ठ- 4

गो सेवा का साक्षात्.. पृष्ठ- 5

सन्त रविदास भक्ति.. पृष्ठ- 8

चुनावी तराजू पर.... पृष्ठ- 12

- सच्ची श्रद्धा के महामानव स्वामी श्रद्धानन्द
- नागरिकता (संशोधन) विधेयक का विरोध कितना जायज
- गठबंधनों की राह में राजनीतिक उम्मीदों की तलाश
- हिन्दू धर्म पर सेकुलरवादी राजनीतिक दलों का संघ्रातिक हमला-शेषशायी भगवान विष्णु के प्राचीन पद्मनाम स्वामी मन्दिर की प्राचीन धरोहर व खजाने का रहस्य उजागर!

उत्तर प्रदेश में एक बार फिर माफ हो सकता है किसानों का कर्ज

हिन्दू महासभा ने किसानों की समस्याओं को तुरन्त दूर करने मांग की

● संवाददाता ●

खबर है कि लोकसभा चुनाव से पहले उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ ने एक बार फिर किसानों के कर्जे को माफ करने की योजना बना रही है। चुनाव की तारीख जैसे– जैसे नजदीक आती जा रही हैं वैसे वैसे देश की सभी पार्टियों का दिल दिलदार होता जा रहा हैं सभी को अब जनता की परेशानियां दिखाई दे रही हैं। लोकसभा चुनाव को देखते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एक बड़ा फैसला कर सकते हैं। शेष पृष्ठ 11 पर

कुंभ से सरकार को होगी १२०० अरब रुपये की आमदनी

कुंभ भारतीय आध्यात्मिकता का प्रतीक–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

प्रयागराज में संगम की रेती पर बसे आस्था के कुंभ से उत्तर प्रदेश सरकार को १,२०० अरब रुपये का राजस्व मिलने की उम्मीद है। उद्योग मंडल भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) ने यह अनुमान लगाया है। सीआईआई की एक रिपोर्ट के मुताबिक १५ जनवरी से ४ मार्च तक आयोजित होने वाला कुंभ मेला हालांकि धार्मिक और आध्यात्मिक आयोजन है मगर इसके आयोजन से जुड़े कार्यों में छह लाख से ज्यादा कामगारों के लिए रोजगार उत्पन्न हो रहा है। उत्तर प्रदेश सरकार ने ५० दिन तक चलने वाले कुंभ मेले के लिए आयोजन के लिए ४,२०० करोड़ रुपये आवंटित किए हैं जो वर्ष २०१३ में आयोजित महाकुंभ के बजट का तीन गुना है। सीआईआई के अध्ययन के मुताबिक कुंभ मेला क्षेत्र में आतिथ्य क्षेत्र में करीब ढाई लाख लोगों को रोजगार मिलेगा। इसके अलावा एयरलाइंस और हवाई अड्डों के आसपास से करीब डेढ़ लाख लोगों को रोजी–रोटी मिलेगी। वहीं, करीब ४५,००० टूर ऑपरेटरों को भी रोजगार मिलेगा. साथ ही इको टूरिज्म और मेडिकल टूरिज्म के क्षेत्रों में भी लगभग ८५,००० रोजगार के अवसर बनेंगे। रिपोर्ट के मुताबिक, इसके अलावा टूर गाइड्स टैक्सी चालक द्विभाषिये और स्वयंसेवकों के तौर पर रोजगार के ५५ हजार नए अवसर भी सृजित होंगे। इससे सरकारी एजेंसियों तथा वैयक्तिक कारोबारियों की आय बढ़ेगी। सीआईआई के अनुमान के मुताबिक कुंभ मेले से उत्तर प्रदेश को करीब १२ सौ अरब रुपये का राजस्व शेष पृष्ठ 11 पर

संयम की शुरूआत है उपवास

उपवास यानि व्रत आजकल लोगों ने इसको अंध श्रद्धा का नाम दे दिया है। मगर ये भारतीय संस्कृति में स्वस्थ्य रहने की अनूठी प्रक्रिया है। आप इसको अपने जीवन का हिस्सा बना कर अपने शरीर का कायाकल्प कर सकते हैं और अनेकों स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आपको भूखा रखकर भगवान को कोई खुशी नहीं होगी, अगर कुछ होगा तो वो ये कि आपका स्वस्थ्य बेहतर से और बेहतर होता चला जायेगा। आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ 'चरक संहिता' से लेकर आज के विभिन्न चिकित्सकीय की शोधों ने भी उपवास के अनेक लाभ बताए हैं। उपवास से पाचनतंत्र दुरूस्त रहता है जिससे शरीर में उपस्थित विषाक्त पदार्थो का निष्कासन आसानी से हो जाता है। हर सप्ताह उपवास रखने से कोलेस्ट्राल की मात्रा घटने लगती है जो धमनियों के लिए लाभदायक है।

ये बात अनेक विश्वविद्यालयों में शोधों से सिद्ध की जा चुकी है कि जो लोग सप्ताह या पंद्रह दिन में एक बार उपवास करते है, उनको रोग अतिरोधक शक्ति कहीं अधिक होती है। ऐसा क्या होता है उपवास करने से। दरअसल हमारा शरीर अपने अंदर सब कुछ समा लेता हैं। इसकी नस नाड़ियों में गंदगी जमी रहती है, ये कहीं और से नहीं आती, बल्कि ये हमारे द्वारा ग्रहण किये गए भोजन के अपशिष्ट पदार्थ हैं, जो अच्छे से हमारे शरीर से निकल नहीं पाते और हमारी अनेक बीमारियों का कारण बनते हैं ये बीमारियां गैस बनने से लेकर कैंसर तक हो सकती है। जब हम व्रत करते हैं तो हमारा शरीर नया भोजन ग्रहण नहीं करता, इस समय से सिर्फ सफाई करता है। जिस प्रकार घर की सफाई में विशिष्ट स्थान है उसी प्रकार से शरीर की सफाई वाले दिन सिर्फ पानी पीना चाहिए। एनर्जी के लिए पानी में निम्बू और शहद दोनों मिलकर पिएं। व्रत करने से हमारी गंदगी निकलकर शरीर का पुनः कायाकल्प हो जाता है। अगर कोई व्यक्ति महीने में तीन दिन तक लगातार व्रत करे तो उसका शरीर चंदन सा निखर आयेगा और कोई रोग भी नहीं होगा। आज कल व्रत के नाम पर लोग व्रत में खाया जाने वाला नमकीन और पता नहीं क्या–क्या खाते हैं, ऐसे में उनके स्वस्थ्य की क्या प्राप्ति होगी?

पहले लोग मेहनत करते थे, तो वो भी सिर्फ दो समय ही खाना खाते थे, मगर आज कल बिना किसी शारीरिक परिश्रम के लोग तीन–तीन बार खाना खाते हैं। रात को खाया और सो गए, सुबह उठे, मत त्याग किया फिर खा लिया, और भाई ऐसा क्या काम कर दिया जिससे आपको दोबारा भोजन करना पड़ा। पाचन प्रक्रिया को कोई *आराम नहीं। यही कारण है हमारी अनेक बीमारियों का।* इसके लिए एक कहावत है कि योगी खाये एक बार भोगी खाये दो और रोगी खाये बार–बार। अभी आप देखें कि आप किस स्थिति में हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अफ्रीका के सहारा मरूस्थल में खाद्य आपूर्ति बंद हो जाने के कारण मित्र राष्ट्रों की सेनाओं को तीन दिन तक अन्न, जल कुछ भी प्राप्त नहीं हो सका। चारो और सुनसान रेगिस्तान तथा धूल–कंकड़ों के अतिरिक्त कुछ भी दिखाई नहीं देता था। रेगिस्तान पार करके कुल सात सौ सैनिकों की उस टुकड़ी में से मात्र २१० व्यक्ति ही जीवित बच पाए। बाकी भूख–प्यास के कारण रास्ते में ही मर गये। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इन जीवित सैनिकों में से ८० प्रतिशत अर्थात १८६ सैनिक हिन्दू थे। इस आश्चर्यजनक घटना का जब विश्लेषण किया गया। तो विशेषज्ञों ने यह निष्कर्ष निकाला कि ये निश्चय ही ऐसे पूर्वजों की संतानें थी जिनके रक्त में तप, उपवास, सहिष्णुता एवं संयम का प्रभाव रहा होगा। ये अवश्य ही श्रद्धापूर्वक कठिन व्रतों का पालन करते रहे होंगे। 'हिन्दू संस्कृति के वे सपूत रेगिस्तान में अन्न, जल के बिना भी इसलिए बच गये क्योंकि उन्होंने, उनके माता–पिता ने अथवा उनके दादा–दादी ने इस प्रकार की तपस्या की होगी। सात पीढ़ियों तक की संतति में अपने संस्कारों का अंश जाता है।

यहां एक बात और बहुत महत्वपूर्ण है कि किसी भी हाल में व्रत जबर्दस्ती न किया जाए। अगर आप शरीर के प्राकृतिक चयन पर गौर करेंगे कि हर ४० से ४८ दिनों में शरीर एक खास चक्र से गुजरता है। ११ से १४ दिनो में एक दिन ऐसा भी आता है **शेष पृष्ठ 11 पर**

साप्ताहिक राशिफल

मेष : कुछ लोगों के इस सप्ताह आमदनी के नये स्रोत बनने की संभावना है। अपने कार्य या व्यवसाय के अलावा धर्म कर्म में भी रूचि बढ़ेगी। इस समय पडोसियों से सावधान रहे अन्यथा समस्या खड़ी हो सकती है। लम्बी यात्रा के अवसर प्राप्त हो सकते हैं।

वृष : नये कार्य इस समय नहीं करने चाहिए क्योंकि श्रम अधिक करना पडेगा और उसके मुकाबले लाभ कम मिलेगा। परिवार में पिता या बुजुर्ग के स्वास्थ्य में समस्या आ सकती है। स्वय भी स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न करें। रूके हुये धन की प्राप्ति होगी।

मिथुन : इस सप्ताह बहुत सारे लोग शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को लेकर परेशान व चिन्तित रह सकते है। आर्थिक मामले में इस समय कुछ सुधार जरूर होगा। लेकिन धनाभाव की स्थिति बनी रहेगी। व्यवसाय में साझेदारी करने के लिए समय अनुकूल है।

कर्क : कुछ लोगों को सन्तान के कार्यो से दुःख मिलेगा। मित्रों को शत्रु न बनाये अन्यथा धन की हानि होने की सम्भावना है। कार्य योजनाओं के निस्तारण के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ सकती है। माता व पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

सिंह : इस सप्ताह कुछ लोगों को मित्रों तथा रिश्तेदारों से अप्रत्याशित व्यवहार का सामना करना होगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय अच्छा है जो लोग किसी परीक्षा में बैठेगें उनके लिए यह समय बहुत ही अच्छा है। अविवाहितों के विवाह होने के योग बनेगे।

कन्या : इस सप्ताह आप–अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखें अन्यथा आपसी तालमेल बिगड़ सकता है। छोटे बच्चों के माथे या सिर पर चोट लग सकती है। भाग्य एक तरफ आपके आय में बढोत्तरी करेगा। लेकिन दूसरी तरफ अनाप–शनाप के खर्चे भी बढ़ेगे।

तुला : कुछ लोगों को इस वक्त नौकरी में सावधान रहने की आवश्यकता है। सन्तान की तरफ से प्रसन्नता रहेगी। साझेदारी के कार्यो में लाभ होगा। इस समय आपको आलस्य बहुत आयेगा। अतः आप सभी के लकडी से हवन करवाये।

वृश्चिक : कार्यो में सफलता प्राप्त होगी। आय की दृष्टि से यह समय अच्छा नहीं है। धर्म व कर्म पर खर्च होगा। स्वभाव नकारात्मक रहेगा जिससे सन्तान सुख में बाधा आयेगी। अविवाहित लोगों के विवाह का योग बन रहा है। कर्ज से बचना चाहिए। अर्थ तन्त्र मजबूत होगा।

धनु : सामाजिक कार्यो से मान प्रतिष्ठा में लाभ होगा लेकिन आपसी विवादों से बचना ही हितकर रहेगा। आपके उत्साह में वृद्धि होगी और कुछ कर गुजरने की योग्यता का प्रर्दशन करेगें। आमदनी की उतनी बढ़ोत्तरी नहीं होगी। जितनी आप अपेक्षा करेंगे।

मकर : इस सप्ताह कुछ लोगों के परिवार में अचानक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। सन्तान की प्रगति में बाधा आ सकती है। क्रोध बहुत आयेगा और चिडचिड़ापन भी पैदा हो सकता है। नौकरी पेशा वालों को पदोन्नति का लाभ मिलेगा।

कुम्भ : इस समय कुछ लोगों को आकस्मिक धन लाभ के योग बनेंगें। धार्मिक कार्यो का आयोजन घर मे हो सकता है। इन दिनों आपको अनिद्रा की भी शिकायत हो सकती है। किसी मित्र का सहयोग आपको लाभ दिलायेगा। नौकरी पेशा वालों के लिए अपने ऊपर के कर्मचारी से बहुत अच्छा सहयोग मिलेगा।

मीन : बहुत सारे लोगों को पिछले सप्ताह किये गये कार्यो का प्रतिफल प्राप्त होगा। मकान, वाहन या जमीन जायदाद के प्राप्ति के योग बनेगे। आप जो कुछ भी करेगे इस समय आपको लाभ ही लाभ होगा। सर्दी जुकाम जैसे रोगों से सावधान रहना होगा।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीरामचरितमानस

सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परस कुधात सुहाई।।
बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि महन सम निज गुन अनुसरहीं।।

दुष्ट भी सत्संगति पाकर सुधर जाते हैं, जैसे पारस के स्पर्श लोहा सुहावना हो जाता है (सुन्दर सोना बन जाता है)। किन्तु दैवयोग से यदि कभी सज्जन कुसंगति में पड़ जाते हैं, तो वे वहाँ भी साँप की मणि के समान अपने गुणों का ही अनुसरण करते है (अर्थात् जिस प्रकार साँप का संसर्ग पाकर भी मणि उसके विष को ग्रहण नहीं करती तथा अपने सहज गुण प्रकाश को नहीं छोड़ती, उसी प्रकार साधु पुरूष दुष्टों के संग में रहकर भी दूसरों को प्रकाश ही देते हैं, दुष्टों का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता)।।५।।

बिधि हरि हर कबि कोबिद बानी। कहत साधु महिमा सकुचानी।।
सो मो सन कहि जात न कैसें। साक बनिक मनि गुन गन जैसें।।

ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कवि और पण्डितों की वाणी भी संत–महिमा का वर्णन करने में सकुचाती है, वह मुझसे किस प्रकार नहीं कही जाती, जैसे साग–तरकरी बेचनेवाले से मणियों के गुणसमूह नहीं कहे जा सकते।।६।।

दो० - बंदउँ संत समान चित हित अनहित नहिं कोइ।
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोइ।।३(क)।।

मैं सतों को प्रणाम करता हूँ, जिनके चित्त में समता है, जिनका न कोई मित्र है और न शत्रु! जैसे अंजलि में रखे हुए सुन्दर फूल (जिस हाथ ने फूलों को तोड़ा और जिसने उनको रखा उन) दोनों ही हाथों को समानरूप से सुगन्धित करते हैं (वैसे ही संत शत्रु और मित्र दोनों का ही समान रूप से कल्याण करते हैं)।।३ (क)

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 30 जनवरी से 05 फरवरी 2019 तक

अध्यक्षीय

नागरिकता (संशोधन) विधेयक का विरोध कितना जायज

इन दिनों नागरिकता (संशोधन) विधेयक काफी चर्चा में है। केंद्रीय मंत्रिमंडल की ओर से बांग्लादेश, अफगानिस्तान और पाकिस्तान के गैर मुस्लिमों को भारतीय नागरिकता प्रदान करने के लिए नागरिकता संशोधन विधेयक को मंजूरी दे दिये जाने के बाद असम गण परिषद ने इस विधेयक के विरोध में भाजपा को दिया गया समर्थन वापस ले लिया है। यह विधेयक २०१६ में पहली बार पेश किया गया था लेकिन सरकार का कहना है कि इसका मसौदा दोबारा से तैयार किया गया है। भाजपा ने २०१४ के लोकसभा चुनावों में इसका वायदा किया था। नागरिकता अधिनियम, १९५५ में संशोधन करने के लिए लोकसभा में नागरिकता विधेयक लाया गया था। इस विधेयक के जरिये अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश के अल्पसंख्यक समुदायों–हिंदुओं, सिखों, बौद्धों, जैन, पारसियों और ईसाइयों को बिना समुचित दस्तावेज के भारतीय नागरिकता देने का प्रस्ताव रखा है। इसमें भारत में उनके निवास के समय को १२ वर्ष के बजाय छह वर्ष करने का प्रावधान है। यानी अब ये शरणार्थी ६ साल बाद ही भारतीय नागरिकता के लिए आवेदन कर सकते हैं। इस बिल के तहत सरकार अवैध प्रवासियों की परिभाषा बदलने के प्रयास में है। वैसे देखा जाये तो एनआरसी और नागरिकता संशोधन बिल एक–दूसरे के विरोधाभासी हैं क्योंकि जहां एक ओर नागरिकता संशोधन विधेयक में भारतीय जनता पार्टी धर्म के आधार पर शरणार्थियों को नागरिकता देने पर विचार कर रही हैं वहीं एनआरसी में धर्म के आधार पर शरणार्थियों को लेकर कोई भेदभाव नहीं है। कांग्रेस, शिवसेना, जदयू, असम गण परिषद और तृणमूल कांग्रेस इस विधेयक के विरोध में हैं। कांग्रेस का कहना है कि यह १९८५ के 'ऐतिहासिक असम करार' के प्रावधानों का उल्लंघन है जिसके मुताबिक १९७१ के बाद बांग्लादेश से आए सभी अवैध विदेशी नागरिकों को वहां से निर्वासित किया जाएगा भले ही उनका धर्म कुछ भी हो। नागरिकता संशोधन विधेयक पर संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) की अंतिम रिपोर्ट में कम से कम चार विपक्षी दलों की सहमति नहीं है और इस समिति में उनके प्रतिनिधियों ने रिपोर्ट में अपना विरोध दर्ज कराया है। कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस, माकपा और समाजवादी पार्टी के सदस्यों ने इस विधेयक पर जेपीसी रिपोर्ट में अपनी असहमति दर्ज करायी है। असहमति भरे नोट में से एक में कहा गया है, ''नागरिकता संशोधन विधेयक, २०१६ पर संयुक्त समिति के सदस्य के तौर पर हम कह सकते हैं कि अंतिम रिपोर्ट में समिति में आम सहमति नहीं थी। हम इस विधेयक के विरुद्ध हैं क्योंकि यह असम में जातीय विभाजन को सतह पर लाता है।'' जेपीसी रिपोर्ट को बहुमत से तैयार किया गया है क्योंकि विपक्षी सदस्यों ने धार्मिक आधार पर नागरिकता देने का विरोध किया था और कहा था कि यह संविधान के खिलाफ है असम के दो महत्वपूर्ण संगठनों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की टिप्पणी पर कड़ी प्रतिक्रिया दी और राज्य के लोगों से आगामी लोकसभा चुनाव में भाजपा को हराने का अनुरोध किया। मोदी ने घोषणा की कि विवादित नागरिकता कानून २०१६ संसद में जल्द ही पारित किया जाएगा। आल असम स्टूडेंट्स यूनियन (आसू) और मुक्ति संग्राम समिति (केएमएसएस) ने विधेयक को ''अलोकतांत्रिक'' और ''असंवैधानिक'' बताते हुए कहा कि अगर विधेयक संसद में पारित किया गया तो वह कानूनी लड़ाई शुरू करेगा। उन्होंने कहा, मोदी ने साफ कह दिया कि वह २०१९ का संसदीय चुनाव भारत के लिए नहीं बल्कि विदेशियों के लिए लड़ेंगे। दूसरी ओर कांग्रेस ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर असम को धार्मिक और भाषाई आधार पर बांटने की कोशिश करने का आरोप लगाया है। कांग्रेस का कहना है कि मोदी हिंदू बांग्लादेशियों को केवल वोट बैंक की राजनीति के लिए असम लाना चाहते हैं। बहरहाल, मुश्किल वाली बात यह है कि असम और अन्य पूर्वोत्तर राज्यों में इस विधेयक के खिलाफ लोगों का बड़ा तबका प्रदर्शन कर रहा है। यही नहीं राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन में शामिल असम गण परिषद ने भाजपा का साथ छोड़ दिया है और कहा है कि हमने इस विधेयक को पारित नहीं कराने के लिए केंद्र को मनाने के लिए आखिरी कोशिश की लेकिन कुछ काम नहीं आया। अब सरकार को कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए खास ध्यान देना होगा क्योंकि पूर्वोत्तर का इलाका बहुत समय बाद शांत हुआ है। लेकिन साथ ही यह भी देखना है कि पूर्वोत्तर क्षेत्र के आबादी समीकरणों को बिगाड़ने के जो प्रयास पूर्व में किये गये उसको सुधारा जाये।अब लोगों की निगाह सरकार के अगले कदम पर है ।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

गठबंधनों की राह में राजनीतिक उम्मीदों की तलाश

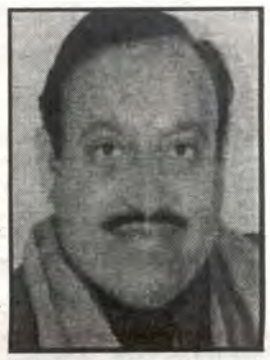

भारतीय राजनीति में पिछले कई दशकों से गठबंधनों की राजनीति चल रही है । इस बार भी लोकसभा चुनाव के परिप्रेक्ष्य में गठबंधनों की राजनीति के रोज नये रंग उभर रहे हैं। सभी राजनीतिक दल चुनाव परिणामों की संभावनाओं की समीक्षा के पश्चात गलतियों को सुधारते हुए जीत को तलाशने में जुट गये हैं। अनेक विरोधाभासों एवं विसंगतियों के बीच राजनीतिक फायदों को तलाशा जा रहा है। सभी दलों के बीच राजनीति नहीं; स्वार्थ नीति देखने को मिल रही है। साझा सरकार के सभी दलों की सोच है कि सरकार में भी रहें और आगामी चुनाव में भी हमारा स्वतंत्र अस्तित्व बना रहे, ठीक इसी तरहं विपक्षी महागठबंधनों में भी ऐसी ही मानसिकता देखने को मिल रही है, इसलिये वे गठबंधन से अलग रहकर या छोटे गठबंधन बनाकर चुनाव लड़ने की तैयारी कर रह हैं। सच्चाई है कि सपा या बसपा का कांग्रेस से मिलकर चुनाव लड़ना, दोनों के लिए फायदे का सौदा नहीं रहा। कांग्रेस को भी ऐसे गठबंधनों से कभी कोई फायदा नहीं हुआ। लेकिन छोटे एवं क्षेत्रीय दल लगातार एक.दूसरे के खिलाफ चुनाव में जीत के लिये हाथ मिलाने को तत्पर हुए हैं, इस तरह अवसरवादिता, नकारात्मकता और सिद्धांतहीनता से बड़ी राजनीति नहीं चलाई जा सकती। पर इस रणनीति में पूर्ण अनुकूलता किसी को नहीं हो रही है। अवसर का लाभ और अपनी मान्यताओं पर कायम रहना, दोनों बातें चाहते हैं, जो आज की स्थिति में संभव नहीं है। कहावत है राजनीति में नामुमकिन शब्द नहीं होता। सम्पूर्ण साक्षरता का नारा देने वाली संसद के सदस्य शपथ तक नहीं पढ़ सकते। भारत की अखण्डता और एकता को सर्वोपरि मानने वाले क्षेत्रीयवाद, जातीयता को पनपा रहे हैं, जो साम्प्रदायिकता से कम जहरीली नहीं है। हकीकत यह है कि सपा और बसपा दोनों पार्टियां मुख्यतः सामाजिक समीकरणों की राजनीति करती हैं जबकि कांग्रेस और भाजपा माहौल बनाकर चुनाव जीतती हैं। लेकिन दो विरोधी धाराओं का मिलन एवं साथ मिलकर चुनाव लड़ना राष्ट्रीय चुनावी परिदृश्यों को प्रभावित कर पायेगी या नहीं, लेकिन यह निश्चित है कि उत्तर प्रदेश की राजनीति पर इसका गहरा असर देखने को मिलेगा। इससे निश्चित ही कांग्रेस की जमीन सरक गयी है और भाजपा के लिये बड़ी चुनौती खड़ी हो गयी है। राष्ट्रीय स्तर पर अगले आम चुनाव का स्वरूप त्रिकोणीय नहीं, भाजपा बनाम कांग्रेस जैसा ही रहेगा, लेकिन राज्यों में अलग.अलग तरह की लड़ाइयां दिखेंगी, जिनमें ज्यादातर जगहों पर एक छोर भाजपा या मोदी का होगा। एक तरह से यह भाजपा की मनचाही स्थिति है। वह लड़ाई को मोदी बनाम राहुल का रूप देना चाहती थी, जो उसे बैठे.बिठाए मिल रहा है। सपा और बसपा ने गठबन्धन बनाकर समग्र विपक्षी एकता को नकारा है। उसका उद्देश्य केन्द्र में सरकार बनाना नहीं है, बल्कि चुनावों के बाद केन्द्र की नई बनने वाली सरकार में सौदेबाजी करने जितनी ताकत जुटाना है। इसका मतलब मोटे तौर पर यही निकलता है कि चुनावों के बाद यदि लोकसभा में भाजपा या कांग्रेस में से किसी भी पार्टी को सरकार गठित करने के लिए मदद की जरूरत पड़ेगी तो उसकी जमकर कीमत वसूली जाएगी। मगर राजनीति ऊपर से देखने में लगती है भीतर से वैसी नहीं होती है और इसकी हकीकत अलग होती है। यह निश्चित है कि अपने.अपने जातिगत आधार पर इन दोनों ही पार्टियों में इतनी शक्ति नहीं बन पाती कि वे भावी सत्ता में अपनी निर्णायक भूमिका अदा कर सके। इसलिये इन दोनों दलों का साथ चुनाव लड़ने का निर्णय राजनीतिक सूझबूझ का तो द्योतक है। ऐसी ही राजनीति करते हुए अब तक कांग्रेस को इस राज्य की सत्ता से दूर रखा गया है और जिसमें सपा एवं बसपा के साथ भाजपा लखनऊ में सत्ता में बैठती रही हैं। इस बार भी ऐसा ही कुछ देखने को मिलेगा। जनाकांक्षाओं को किनारे किया जा रहा है और विस्मय है इस बात को लेकर कोई चिंतित भी नजर नहीं आता। जो शिखर पर हो रहा है उसी खेल का विस्तार आज उत्तर प्रदेश की राजनीति के आस.पास भी दिखाई दे रहा है। उससे भी ज्यादा विस्मय यह है कि हम दूसरों पर सिद्धांतों से भटकने का आरोप लगा रहे हैं, उन्हीं को गलत बता रहे हैं और हम उन्हें जगाने का मुखौटा पहने हाथ जोड़कर सेवक बनने का अभिनय कर रहे हैं। मानो छलनी बता रही है कि सूप (छाज) में छेद ही छेद हैं। एक झूठ सभी आसानी से बोल देते हैं कि गलत कार्यो की पहल दूसरा (पक्ष) कर रहा है। जबकि वास्तविकता यह है कि अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए स्वयं कुछ भी कर गुजरने को तैयार हैं और इस तैयारी में विचारधाराएं, आदर्श हाशिए पर जा चुके हैं। ऐसी स्थित मिं दागदार चरित्रों की संख्या दिनोंदिन बढ़ रही है। मगर प्रदेश की इस राजनीतिक लड़ाई का ताल्लुक कभी भी राष्ट्रीय नीतियों या राज्य के विकास के मुद्दों से नहीं रहा। लेकिन दूसरी तरफ यह भी हकीकत है कि इसी राज्य के लोगों ने १९६६ के लोकसभा चुनावों को छोड़कर कभी भी राष्ट्रीय मुद्दों को अपनी नजरों से ओझल नहीं होने दिया। इस बार लोकसभा चुनाव वोटबैंक के हस्तांतरण से नहीं बल्कि विचारधारा के हस्तांतरण से तय होने जा रहे हैं, तीन तलाक अध्यादेश हो या राम मन्दिर का मसला चुनाव जीतने का हथियार बनने वाला है।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

मेवे करेंगे सेहत से आपकी पक्की दोस्ती

✍ रमेश कुमार उपाध्याय

क्या आप जानती हैं, काजू, किशमिश, बादाम, अखरोट जैसे मेवे न सिर्फ खाने में स्वादिष्ट होते हैं, बल्कि सेहत के लिहाज से भी उपयोगी होते हैं। सिर्फ ज्यादा कैलोरी के डर से सूखे मेवे के फायदे से खुद को और अपने परिवार को वंचित न करें, बल्कि सही तरीके से और सही मात्रा में उन्हें अपनी डाइट का हिस्सा बनायें।

पोषण से भरपूर

मेवे पोषक तत्त्वों की खान होते हैं। इनमें काफी मात्रा में प्रोटीन, विटामिन–ई, ओमेगा–३ और ओमेगा–६ फैटी एसिड होते हैं। काजू और किशमिश में जहाँ प्रोटीन और विटामिन ज्यादा मात्रा में होते हैं, वहीं बादाम व अखरोट में अनसैचुरेटेड फैट भरपूर होता है। अनसैचुरेटेड फैट दिल की सेहत के लिए अच्छा होता है।

मात्रा का रखें ध्यान

वैसे तो मेवे सेहतमंद होते हैं, पर उन्हें खाते वक्त सही मात्रा का ध्यान रखना जरूरी है। एक दिन में चार–पाँच मेवे खाना सेहत के लिए ठीक रहता है। बढ़ती उम्र के लोग भी सूखे मेवों को अपनी डाइट का हिस्सा बना सकते हैं। जिन लोगों को दाँतों से जुड़ी परेशानी है, वे मेवे को कुछ देर पानी में भिगोने के बाद खा सकते हैं। बढ़ते बच्चों की पोषण सम्बन्धी जरूरतों को पूरा करने के लिए उन्हें ज्यादा मात्रा में मेवे खाने के लिए दिये जा सकते हैं।

मेवों को खाते वक्त इस बात

का भी ध्यान रखना चाहिए कि आप उन्हें किस रूप में खाते हैं? नमकीन के रूप में बाजार में उपलब्ध मेवों को खाने से बचें।

ऐसे बनाएँ इन्हें डाइट का हिस्सा

❖ काजू–किशमिश आदि को भूख लगने पर स्नैक्स आदि के रूप में न खाएँ। आकार में छोटे होने के कारण हम इन्हें अमूमन ज्यादा मात्रा में खा लेते हैं। इसकी जगह आप मेवों को सलाद में डालकर खा सकती हैं। इससे सलाद न सिर्फ ज्यादा स्वादिष्ट और सेहतमंद बनेगा, बल्कि वह दिखने में आकर्षक और खाने में कुरकुरा भी लगेगा।

❖ अगर आप नियमित रूप से मेवों का सेवन नहीं कर पा रही हैं तो काजू और बादाम के गुणों से युक्त बिस्कुट को अपने टी–टाइम का नियमित रूप से हिस्सा बना लें। ऐसा करने से शरीर को मेवों का पोषण भी मिलेगा और आपको अतिरिक्त मेहनत भी नहीं करनी पड़ेगी।

❖ अगर सुबह नाश्ते में आप ओट्स या कॉर्नफ्लेक्स जैसी चीजें खाती हैं तो उसमें थोड़ा सा मेवा मिला दें। आप हर दिन अपने नाश्ते में अलग–अलग तरह के मेवे मिलाकर खा सकती हैं।

❖ सब्जी की ग्रेवी बनाते वक्त भी उसमें आप थोड़े से मेवे डाल सकती हैं। ग्रेवी में काजू को पीस डालें वह गाढ़ी भी हो जायेगी और उसका स्वाद भी बेहतर हो जायेगा।

जल-सेवन विधि

हमारे शरीर में जलीय अंश की मात्रा ५० से ६० प्रतिशत है। प्रतिदिन सामान्यतः २३०० मि. ली. पानी त्वचा, फेफड़ों व मूत्रादि के द्वारा उत्सर्जित होता है। शरीर को पानी की आवश्यकता होने पर प्यास लगती है। उसकी पूर्ति के लिए जितना आवश्यक है, उतना ही पानी पीना चाहिए। उससे कम अथवा अधिक पानी पीना, प्यास लगने पर भी पानी न पीना अथवा बिना प्यास के पानी पीना रोगों को आमंत्रण देना है।

आयुर्वेद जल-सेवन विधि

१. भोजन के आरम्भ में पानी पीने से जठराग्नि मंद होती है व दुर्बलता आती है।

२. भोजन के बीच–बीच में गुनगुना पानी पीना चाहिए। इससे अन्न का पाचन सहजता से होकर शरीर को सत्पधातुओं में साम्य बना रहता है वह बल आता है। ठंडा पानी हानिकारक है। प्रायः भोजन के बीच एक गिलास (२५० मि. ली.) पानी पीना पर्याप्त है।

३. भोजन के तुरंत बाद पानी पीने से कफ की वृद्धि होती व मोटापा आता है। भोजन के एक से डेढ़े घंटे बाद पानी पीना चाहिए।

४. भोजन करते समय जठर का आधा भाग अन्न से व एक चौथाई भाग पानी से भरें तथा एक चौथाई भाग वायु के लिए रिक्त रखें।

५. पचने में भारी, तले हुए पदार्थों का सेवन करने पर उनका सम्यक् पाचन होने तक बार–बार प्यास लगती है। उसके निवारणार्थ गुनगुना पानी ही पीना चाहिए।

६. केवल गर्मियों में ही शीतल जल पीयें, बारिश व सर्दियों में सामान्य या गुनगुना जल ही पीयें।

७. सूर्योदय से २ घंटे पूर्व रात का रखा हुआ आधा लीटर पानी पीना असंख्य रोगों से रक्षा करने वाला है।

८. रात को सोने से पहले उबालकर रखा हुआ गर्म पानी पीने से त्रिदोष साम्यावस्था में रहते हैं। पानी को यदि ३/४ भाग शेष रहने तक उबालते हैं तो वह पानी वायुशामक हो जाता है। १/२ शेष रहने तक उबालते हैं तो वह पित्तशामक तथा १/४ शेष रहने तक उबालते हैं तो वह कफशामक हो जाता है।

९. जब बायाँ नथुना चल रहा हो तभी पेय पदार्थ पीना चाहिए। दायाँ स्वर चालू हो उस समय यदि पेय पदार्थ पीना पड़े तो दायाँ नथुना बंद करे बायें नथुने से स्वास लेते हुए ही पीना चाहिए।

१०. खड़े होकर पानी पीना हानिकारक है, बैठकर और चुस्की लेत हुए पानी पीयें।

लंबा और स्वस्थ जीवन जीने के ये हैं मंत्र

आदिकाल से ही मनुष्य की आकांक्षा बुढ़ापे और रोगों से दूर रहते हुए दीर्घायु प्राप्त करने की रही है। उसकी इस आकांक्षा को पूर्ण करने के लिए हमारे ऋषियों ने आयुर्वेद का प्रदुर्भाव किया। आयुर्वेद मात्र एक चिकित्सा पद्धति न होकर संपूर्ण जीवन जीने का विज्ञान है। इस पद्धति में हर मनुष्य को शरीर–इंद्रिय–मन–आत्मा का संयोग माना गया है, इसलिए इसमें शारीरिक स्वास्थ्य के साथ–साथ इंद्रिय, मन एवं आत्मा को भी स्वस्थ्य एवं प्रसन्न रखना महत्वपूर्ण माना गया है। इस तरह इस जीवन विज्ञान के सिद्धांतों का अनुसरण करने वाला मनुष्य पूर्ण स्वास्थ्य एवं यौवन के साथ दीर्घायु प्राप्त करता है।

स्वस्थ जीवन जीने के लिए सूर्योदय से पूर्व उठना चाहिए। प्रतिदिन नियमित रूप से आसन एवं प्राणायाम करना चाहिए, जिससे शरीर के समस्त अंग ऊर्जावान एवं क्रियावान बने रहे। किसी बाग, उपवन तथा नदी के किनारे टहलना अधिक लाभप्रद है। धूप, ताजी हवा, साफ–स्वच्छ पानी और सादा सात्विक भोजन स्वस्थ रहने हेतु अत्यंत आवश्यक है। लगभग तीस प्रतिशत रोग भोजन की अनियमितता से जुड़े होते हैं। तला हुआ, मिर्च मसालेदार भोजन, भोजन करने को अनियमित काल, भोजन को अधिक गर्म अथवा अधिक ठंडा करके खाना, ऋतु के अनुसार भोजन न करना, पौष्टिक तथा सभी रसों से भरपूर भोजन न करना, व्याधियों को निमंत्रण देता है।

आयुर्वेद के अनुसार आहार की मात्रा एवं समय दोनों उसके सम्यक पांच हेतु अत्यंत आवश्यक है। आयुर्वेद के अनुसार मल–मूत्र त्याग के पश्चात् इंद्रियों के निर्मल हो पर, शरीर को हल्का अनुभव होने पर, अत्यंत शुद्ध उद्गार आने पर, हृदय के ऊपर किसी प्रकार के भार की प्रतीति न होने पर, अपानवायु के ठीक प्रकार से निकाले जाने पर, शारीरिक–मानसिक कष्ट का अनुभव न होने पर तथा उदर के शिथिल होने पर मनुष्य को भोजन करना चाहिए। आधा पेट आहार से भरना चाहिए, चौथाई पानी के लिए और चौथाई हवा के लिए खाली रखना चाहिए। व्यक्ति को अपनी शरीरिक, मानसिक स्थिति तथा कार्य के अनुसार भोजन का निर्धारण करना चाहिए। व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, संग्रगात्मक और सामाजिक क्षमता के संतुलन के लिए आहार अत्यंत आवश्यक संग्रगात्मक और सामजिक क्षमता के संतुलन के लिए आहार अत्यंत आवश्यक है। दूध, दही, घी, शहद, गेहूं के ज्वारे का रस, मूली, गाजर, पुदीना, धनिया, खीरा एवं फलों में अंगूर, आम, नारंगी, अनानास, फलालसा, सिंघाड़ा, केला, अमरूद, गन्ने का रस और हर प्रकार की हरी सब्जी तथा मेथी, अजवाइन, सौंठ, हींग आदि का सेवन व्यक्ति को स्वस्थ रहने हेतु अवश्य करना चाहिए। अंकुरित अनाज, चलना, मूंग, गेहूं, मूंगफली, उड़द, मेथी तथा सोयाबीन आदि को भोजन में शामिल करे। भोजन धीरे–धीरे खूब चबा–चबाकर खाएं। 'रोटी को पिएं तथा दूध को खाएं' अर्थात रोटी को इतना चबाएं कि वह मीठी लगने लगे, जब वह लार के साथ मिलकर पेट में जाएगी तथा सुपाच्य होकर अच्छी ऊर्जा देगी।

दोनों समय भोजन करने के बाद यथा संभव कुछ देर आराम करें। ६ श्वास दाहिनी करवट, १६ श्वास सीधी करवट तथा ३२ श्वास बाई करवट लेट कर लें। इससे पाचन ठीक होता है। इसके बाद वज्रासन अवश्य करें। भोजन से ही शरीर का पोषण होता है और मनुष्य का स्वस्थ्य एवं दीर्घायु होना बहंत अधिक उसके द्वार किए गए पौष्टिक भोजन पर निर्भर करता है। दिन भर में करीब ढ़ाई–तीन लीटर जल जरूर पीएं। भोजन के साथ जल न पीएं, केवल बीच–बीच में दो–तीन घूंट ही पिएं। भोजन के लगभग एक घंटा पहले तथा एक घंटा बाद जल पिएं। सुबह–शाम के भोजन के मध्य आठ घंटे का अंतर रखें। मध्य में हल्का सुपाच्य पदार्थ या फल आदि ले सकते हैं। चाय, कॉफी, सिगरेट, जर्दा, भांग, चरस, गांजा, शराब, बीड़ी इत्यादि मादक एवं नशीली चीजों को कभी भी सेवन न करें, ये स्वास्थ्य के लिए विषतुल्य है।

गो सेवा का साक्षात् फल

✍ स्वामी श्री भूमानन्दजी

बहुत दिनों की बात है कि एक दिन एक संन्यासी एक ब्राह्मण सद्गृहस्थ के घर अतिथि के रूप में पधारे। उस परिवार में दो ही आदमी थे–पति और पत्नी। परिवार में कोई कमी न थी। दोनों ही धर्मा चरण में लगे रहते थे। परन्तु सन्तान हीन के होने के कारण उनके मन में सर्वदा कमी खटकती और अशान्ति बनी रहती थी। ब्राह्मण–दम्पति ने खूब आदर–सत्कार करते हुए संन्यासी को घर में टिकाया और यथासाध्य उनकी सेवा की। उन दिनों सब लोगो के मनों में साधु–संन्यासी के प्रति विश्वास और भक्ति का भाव था। दूसरी ओर साधु लोगों में भी उस समय अपने वेष के अनुसार ही आचार, व्यवहार, बातचीत और विवेक था।

भोजनादि के बाद विश्राम कर लेने पर संन्यासी के साथ नाना प्रकार की बातचीत होने लगी। गाँव के दूसरे लोग भी साधु के दर्शन के लिये आये। बातचीत के सिलसिले में ब्राह्मण की अनुपस्थिति में एक आदमी ने कहा कि 'गाँव में इस ब्राह्मण–दम्पति के समान सत्यवादी, नम्र प्रकृति, धार्मिक और अतिथि सेवा करने वाला आदमी प्रायः देखने में नहीं आता। किन्तु दुःख की बात यह है कि इनको संतान नहीं हुई न जाने भगवान इस प्रकार के धर्मात्मा के ऊपर क्यों अप्रसन्न हैं।' पीछे सब लोग एक–एक करके अपने घर लौट गये, साधु उस रात ब्राह्मण के घर पर ही रहे।

दूसरे दिन प्रातः काल साधु ने अन्यत्र जाने की इच्छा प्रकट की, किन्तु ब्राह्मण ने कहा कि 'आप गृहस्थ के घर अतिथि हैं, भोजन बिना किये आप कैसे जा सकते हैं। दोपहर को भोजन करके विश्राम करने के बाद आपको जहाँ जाना हो, वहाँ जाइयेगा।' संन्यासी राजी हो गये। इससे ब्राह्मण –दम्पति ने प्रसन्न होकर उनको प्रणाम किया। साधु ने यह कहकर उन्हें आशीर्वाद दिया कि 'तुम लोगों को पुत्र का मुँह देखने का सौभाग्य प्राप्त हो।' ब्राह्मण ने किञ्चित् आश्चर्यपूर्वक इस प्रकार के आशीर्वाद कारण पूछा। साधु ने बतलाया कि 'अतिथि सेवा के द्वारा भगवान नारायण प्रसन्न होते हैं। तुम लोगों के इतने दिनों के अतिथि सत्कार के फलस्वरूप अब स्वयं भगवान प्रसन्न हो गये हैं और मुझे निमित्त करके मेरे मुख से यह वर प्रदान कर रहे हैं। तुम लोग इस विषय में कोई सन्देह या अविश्वास न करो।'

ब्राह्मण ने और भी विस्मित हो हाथ जोड़कर पूछा– 'इस समय हमारा कर्तव्य क्या है?' साधु ने उत्तर दिया, 'गो–सेवा'। साधु यथा समय ब्राह्मण के घर से चले गये, ब्राह्मण–दम्पति भी एक ब्याही हुई गाय लेकर उसकी सेवा में लग गये। गाय को प्रातः काल स्नान कराते। नयी–नयी घास लाकर खिलाते, सुन्दर पकाया हुआ अन्न तथा नाना प्रकार के शस्यों के द्वारा उसे तृप्त करने का प्रयास करते। इसी प्रकार गो–सेवा करते उनके दिन बीतने लगे। ब्राह्मणी गौ के चरण धोकर उनको अपने केशों से पोंछती। चरणोदक मस्तक पर लगाती और पान करती। सन्ध्या के समय गो–गृह में दीप जलाती और उसके लिये तृणों की कोमल शयया तैयार कर देती। खूब तड़के उठकर गाय के घर को साफ करती। इस प्रकार की सेवा से थोड़े ही दिनों में गाय और उसका बछड़ा दोनों सुन्दर, हृष्ट–पुष्ट दिखलायी देने लगे। आश्चर्य की बात यह है कि कुछ ही समय में ब्राह्मणी को गर्भ के लक्षण दिखलायी देने लगे और समय आने पर उनको एक बालक उत्पन्न हुआ। सारे गाँव में आनन्द का सोता उमड़ चला। सबको उस साधु के आशीर्वाद की बात याद आ गयी। फल यह हुआ कि बहुत लोग गो–सेवा में लग गये।

जानें ऐसा क्यों होता है

१. एयर कंडीशनर से पानी क्यों निकलता है : एयर कंडीशनर से पानी निकलने की क्रिया को आप ऐसे समझ करते हैं कि जब हम किसी ग्लास में ठंडा पानी भर कर रख देते हैं तो ग्लास के ऊपर पानी की बूंदे जम जाती हैं और कुछ समय के बाद यह बूंदे जम जाती हैं और कुछ समय के बाद यह बूंदे पानी के रूप में ग्लास के *नीचे इकठ्ठा हो जाती हैं ऐसे ही* जब एयर कंडीशनर चलता है तो उसमें उत्पन्न गैस उसमें लगे पाइपों से गुजरती है और उन पाइपों के ऊपर पानी की बूंदें जमा हो जाती हैं और यही बूंदें बाहर के गर्म वातावरण के सपर्क में आकर पानी का रूप ले लेती हैं और यही पानी एयर कंडीशनर से बाहर निकलता है। यही कारण है कि एयर कंडीशनर से पानी निकलता है।

२. बिजली का बल्ब टूटने पर आवाज़ क्यों करता है : जब बल्ब को बनाया जाता है तो उसके अन्दर की सारी वायु निकालकर शून्य कर दिया जाता है और जब बल्ब टूटता है तो बाहर की वायु उस शून्य स्थान को भरने के लिए तेजी से अन्दर प्रवेश करती है, यही कारण है कि बल्ब के टूटने पर आवाज आती है।

३. तारे क्यों टिमटिमाते हैं : तारे एक समान प्रकाश के साथ चमकते हैं लेकिन इस प्रकाश को हमारी आँखों तक पहुँचने के लिए वायुमंडल की परतों से होकर गुजरना पड़ता है और जब तारों का प्रकाश इन वायुमंडल की परतों से टकराता है तो इसके प्रकाश में अवरोध उत्पन्न होता है। इसी *अवरोध के कारण हमें तारे* टिमटिमाते हुए दिखाई देते है।

४. कोहरा क्या होता है : अक्सर सर्दियों के दिनों में हमें कुहरे का सामना करना पड़ता है। पर क्या आपने कभी सोचा है कि ये कुहरा होता क्यों है और ये आता कहाँ से है, अगर नहीं तो आइये जानते हैं सर्दियों में कोहरा क्यों होता है। कोहरा एक प्रकार का निम्न स्तरीय मेघ या बारिश होती है, जैसा कि आप जानते हैं कि हमारे वायुमंडल में जलवाष्प के कण उपस्थित रहते हैं और जब ज्यादा ठंड पड़ती है तो यह जलवाष्प ओसांक के नीचे और हिमांक के ऊपर रहती है, तो हवा में उपस्थित पानी की बूंदें कोहरे या धुंध के रूप में दिखाई देती हैं असल में पानी की ये बारीक बूंदें हवा में तैर रही होती हैं जिससे दृष्यता बहुत कम हो जाती है।

❖ ओसांक वह स्थिति होती है जब वायुमंडल में स्थित जल वाष्प पानी में बदल कर ओस के रूप में जमीन या पेड–पौधों की पत्तियों पर गिर जाती है या जम जाती है।

❖ हिमांक वह स्थिति होती है जब वायुमंडल में स्थित जब वाष्प बर्फ में बदल जाती है इसी के कारण पर्वतीय क्षेत्रों में बर्फबारी होती है।

६. ट्रेन की पटरियों के आसपास कंकड़ क्यों डाले जाते है : आपने कभी न कभी तो ट्रेन में सफर किया ही होगा, और आपने यह भी देखा होगा कि ट्रेन की पटरियों के आस–पास पथर की गिट्टियाँ डाली जाती हैं, पर क्या आपने कभी सोचा है कि ऐसा क्यों होता है, अगर नहीं तो आइये जानते हैं ऐसा क्यों?

ट्रेन बहुत तेजी से चलती है और जब ट्रेन चलती है तो पटरियों में बहुततेजी से कंपन होता है। इसी कपन के कारण पटिरियाँ इधर–उधर न हिलें इसीलिए रेल की पटरियों के आस पास कंकड़ डाले जाते हैं ये कंकड़ पटरियों पर स्प्रिंग का कार्य करते हैं जब पटरियों से ट्रेन गुजरती है तो ये नीचे की तरफ दब जाते हैं और जब ट्रेन गुजर जाती है तो अपनी जगह पर वापस आ जाते हैं। इन कंकड़ों से एक फायदा और भी होता है कि पटरियों के आस–पास झाड़ियाँ, नहीं उगती हैं, अगर पटरियों के आस–पास कंकड़ की जगह सीमेंट या कुछ और डाला जाये तो कंपन की वजह से उनमें जगह बन जायेगी और पटरियां इधर–उधर खिसक सकती है जिससे रेल दुर्घटना हो सकती है। यही कारण है कि रेल की पटिरियों के आस–पास कंकड़ डाले जाते हैं।

६. आकाश का रंग नीला क्यों दिखाई देता है : पृथ्वी और वायुमंडल के बीच का स्थान क्षोममंडल कहलाता है, सभी मौसमी घटनाये बादल, आँधी, चक्रवात इसी क्षोभमंडल में जन्म लेते हैं जिस कारण यह क्षोभमंडल थूल के कणों से भरा रहता है। जब सूर्य का प्रकाश इस क्षोभमंडल से टकराता है तो क्षोभमंडल में उपस्थित धूल के कण प्रकाश को इधर उधर बिखेर देते हैं और आप तो जानते ही है कि सूर्य का प्रकाश सात रंगों बैंमनी नीला, आसामानी, हरा, पीला, नारंगी, लाल से मिलकर बना होता है,

जब यह प्रकाश क्षोभमंडल से टकराता है तो बैंगनी नीला व आसमानी रंग सबसे ज्यादा फैलते हैं और यहीं कारण है कि प्रकाश के सातों रंगों में से नीला रंग हमें दिन की रोशनी में दिखाई पड़ता है, इसके विपरीत रात में जब सूर्य का प्रकाश पृथ्वी पर नहीं पहुँचता है तो आकश की रंग काला दिखई देता है और तारे दिखाई देते है।

७. क्यों होती है बर्फबारी : तालाब, नदियों आदि का जल वाष्प होकर आकाश में जाता है और संघनित होकर बारिश के रूप में जमीन पर गिरता है। लेकिन जब यह जलवाष्प आकश में अधिक ऊँचाई पर पहुँच जाती है तो वहाँ का तापमान जो कि ० डिग्री से कम होता है इस जलवाष्प में मौजूद पानी के कणों को बर्फ के करण आपस में मिलते हैं तो इनका वजन बढ़ने लगता है और भारी होने के कारण यह जमीन पर गिरने लगते हैं। बर्फबारी पहाड़ी इलाकों में इसलिए होती है क्योंकि वहाँ का तापमान मैदानी इलाकों की अपेक्षा ज्यादा ठंडा होता हैं यही कारण है कि बर्फबारी होती है।

८. क्यों होती है ओलों की वर्षा : आपने देखा होगा कि कभी–कभी बारिश के साथ ओलों की भी वर्षा होने लगती है पर क्या आपने कभी सोचा है कि आकश में ये बर्फ आती कहाँ से है और ये ओलों की वर्षा क्यों होती है तो आइये जानते हैं ऐसा क्यों–

जमीन से पानी आकश में वाष्प के शेष पृष्ठ 11 पर

हिन्दू धर्म पर सेकुलरघादी राजनीतिक दलों का संघातिक हमला-शेषशायी भगवान विष्णु के प्राचीन पद्मनाम स्वामी मन्दिर की प्राचीन धरोहर व खजाने का रहस्य उजागर!

✍ हरिकृष्ण निगम

हाल में शेषशायी भगवान विष्णु के तिरुअनन्तपुरम स्थित प्राचीन श्री पद्मनाम स्वामी मन्दिर के खजाने के रहस्य व हिन्दू–आस्था पर विभिन्न राजनीतिक दलों की घोर अर्थ–लोलुपता किस तरह हावी हो सकती है, यह विवादों का केन्द्र बिन्दु बनकर देश के मीडिया द्वारा एक चटपटे व्यंजन की तरह परोसा जा रहा था। हिन्दू आस्था के एक पवित्र विशाल प्राचीन मन्दिर की बहुमूल्य सम्पत्ति को हड़पने का जो दांव सन् २०१२ के पूर्वाध में खेला गया था हाल में उसमें एक अध्याय तब जुड़ गया जब उच्चतम न्यायालय में रिपोर्ट दायर की गई कि वहां से लगभग एक लाख करोड़ मूल्य के खजाने व पुरातात्विक महत्त्व के बहुमूल्य स्वर्णापरणो व हीरे–मोतियों को रत्नजटिल चांदी सोने की मूर्तियों के गायब किए जाने की आशंका है। यह शक न्यायालय की सहायता के लिए नियुक्त अधिवक्ता गोपाल सुब्रह्मण्यम् ने उच्चतम न्यायालय में दाखिल एक रिपोर्ट में प्रकट किया है। क्योंकि मन्दिर के खजाने के सम्बन्ध में निरन्तर भड़काऊ समाचार छपने से इसके द्वारों व तहकानों के सम्बन्ध में रहस्यमय व अंध ाविश्वास पूर्ण खबरें विश्वभर के अंग्रेजी मीडिया में भी छप रही थी, न्यायालय ने उनके ऊपर प्रतिबन्ध भी लगाया हुआ था। अब फिर से उससे बचने के लिए, विवाद उठाने के लिए राजनीतिक दलों की मन्दिर की सम्पत्ति अपने नियंत्रण में लाने के इरादे से, यहाँ तक कहा गया है कि मन्दिर के प्रांगण में गोल्ड प्लेटिंग मशीन भी मिली है। यह सम्भव है कि मन्दिर के कुछ असली सोने और आभूषणों को या तो चुरा लिया गया है या फिर उन्हें नकली सोने में बदल दिया गया है।

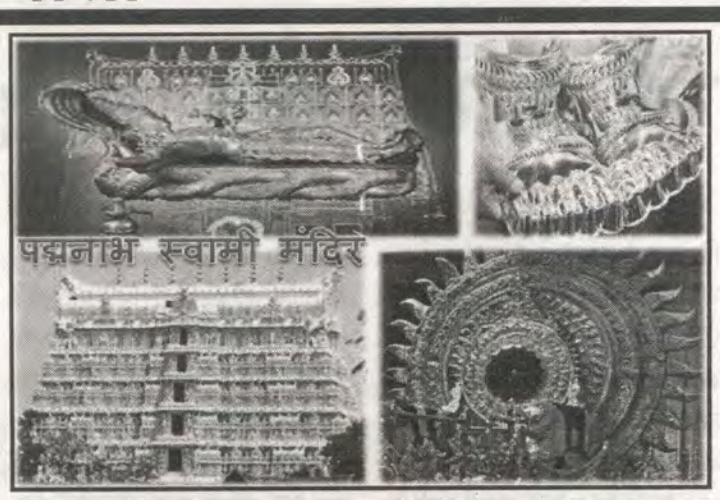

गोपाल सुब्रह्मण्यम् को जांच का दायित्व उच्चतम न्यायालय ने ही सौंपा था जिनका कहना है कि मन्दिर की अव्यवस्था को लेकर गहरा षड़यंत्र रचा गया है। उन्होंने इस खजाने की पूर्व नियंत्रक एवं लेखा परीक्षक से बहुआयामी जांच कराई जाए, बचे बन्द तहखानों को भी खोला जाएऔर पूर्व समाचार जैसे सऊदी सम्राट द्वारा दी गई मूर्तियों की पृष्ठभूमि भी निश्चित की जाए कि क्या वे पहले के किसी लूटे हुए मन्दिर का अवशेष थीं। वस्तुतः सबसे पहले मन्दिर के भूमिग्रस्त खजाने का पता जुलाई २०११ में चला था और बाद में इस मंदिर को सरकार द्वारा अपने नियंत्रण में लेने के केरल उच्चतम न्यायालय के निर्णय लेने के कारण के उस फैसले से असन्तुष्ट होकर उस पर सर्वोच्च न्यायालय ने रोक लगा दी थी। यह मन्दिर त्रावणकोर राजपरिवार के कुल देवता श्री पद्मनामस्वामी का है और राजपरिवार ने अपना सारा साम्राज्य भगवान को अर्पित कर दिया था।

एक समय इस प्राचीन मन्दिर की अकूत सम्पत्ति और रत्नाभूषणों की पुरातन धरोहर के विषय में किसी देशवासी को भी आभास नहीं था। अतीत के आक्रान्ताओं के रक्तरंजित आक्रमणों के नरसंहार के बारे में यही बताया गया कि सदियों के अन्तराल में दुदान्त विदेशियों के किए गए रक्तपात के बाद सोने की चिड़िया कहलाने वाले हमारे समृद्ध देश को लूटकर सोना–चांदी उत्तरी पश्चिमी सीमान्त से परे सुदूर गजनी तथा पश्चिमी एशिया के हिन्दू मन्दिरों के नाश के बाद उनकी स्वर्णाना के हर अवशेष यहां से मिटाते गए। पर आज पद्यनाम स्वामी जैसे बचे कुछ मन्दिरों की धरोहर के रहस्यों के खुलासे के बाद यह स्पष्ट है कि उन मन्दिरों के चाहे संरक्षक–शासक हों या ब्राह्मण वर्ग, उन्होंने इस सम्पति का दुरुपयोग नहीं किया था या उसे निजी आवश्यकताओं पर कभी किसी तरह का अपव्यय किया। सादगी पूर्ण जीवनशैली और सच्ची धार्मिकता के बल पर वे सात्विक जीवन पीढ़ियों तक गुजारते रहे। यद्यपि उन्हें पारम्परिक ज्ञान था जो पीढ़ियों से उन्हें प्राप्त होता रहा था कि वे वस्तुतः विशाल गोपनीय खजानों के स्वामी हैं जिसका वर्तमान मूल्य सैकड़ों–हजारों करोड़ रुपये ही क्यों न हो उन स्वर्णाभूषणों व प्राचीन कलाकृतियों को देश की विरासत के रूप में मूल्य आंका ही नहीं जा सकता है। यह भी सम्भव है कि उत्तर और देश के अन्य भागों में जहां मुस्लिम आक्रान्ताओं ने पिछले एक हजार सालों में लगातार लूटपाट की वहां के ब्राह्मण–वर्ग और आस्थावान शासकों ने अपनी कीमती धरोहर, पाण्डुलिपिया या जो कुछ भी बहुमूल्य था अपने नेटवर्को द्वारा दक्षिण अथवा पूर्व पश्चिम के दूरदराज के प्राचीन तहखानों में भावी पीढ़ी द्वारा खोजे जाने तक सदा के लिए छिपा रखा था। कुछ वर्षो पहले तक मन्दिर की सम्पत्ति के खुलासे का भी अपना इतिहास है जिसने अनेक नाटकीय मोड़ लिए थे। कुछ वर्षो पूर्व एक स्थानीय अधिवक्ता आनन्द पद्मनाम को अपने अनुमानों से जो कुछ ऐतिहासिक ग्रंथों के प्रमाणों व साक्ष्यों में उन्होंने स्पष्ट उल्लखित पाया था, यह मान लिया था कि मन्दिर के सील बन्द तहखानो में सोने–चांदी और हीरे मोतियों के रूप में अपारधन संजो कर रखा गया है। वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सदियों पहले महाराजाओं के रीतिरिवाजों का अनुसार एक ऐसा उत्सव भी मनाया जाता था जहां स्थानीय राजकुमारों को जब वे वयस्क होने लगते थे तब एक शुभमुहूर्त में उन्हें एक बड़े तराजू में तौलकर उनके भार के बराबर सोना मन्दिर में दान किया जाता था। एक बार मन्दिर के भूमिगत तहखाने में बाद वह धन वहीं रह जाता था।

जब यह समाचार फैलने लगा कि तिरुअनन्तपुरम स्थित इस मन्दिर की धनराशि का मूल्य कई बिलियन डालरों के बराबर हैं तब सरकार के साथ देश के कई राजनीतिक दल भी विस्मित थे। सबसे पहले तमिलनाडु का द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम जो हिन्दू विरोध के लिए सदैव जाना जाता रहा है और नेताओं द्वारा अपने को नास्तिक घोषित करने की परम्परा भी रही है उनकी लोलुप दृष्टि ने एक छद्म जाल द्वारा उस मन्दिर के संचालन की ट्रस्ट के सदस्यों पर दबाव डालने व उसका नियंत्रण हथियाने की निर्लज्ज होकर कोशिश प्रारंभ की।

३० –वर्षीय आनन्द पद्मनाम ने अपना सारा जीवन तिरुअनन्तपुरम में ही बिताया था तथा उनका घर और कार्यालय ठीक मन्दिर के दरवाजों के बाहर ऐतिहासिक ब्राह्मण मार्ग पर स्थित था। पद्मनाम मन्दिर वस्तुतः एक सात–मंजिला अट्टालिका है जिसका सामने का सारा भाग हलके पीले रंग के ग्रेनाइट पत्थरों से बना है जिसमें देवी देवता, यक्षगण, द्वारपाल आदि उत्कीर्ण हैं। सारे देश से यहां लाखों लोग आते हैं और नंगे पैर, पारम्परिक धोती में, चमड़े की पेटी या बटुए आदि को बिना लिए, अन्दर दर्शन करते हें। इस मन्दिर के इष्ट भगवान विष्णु है जो भक्तों के अनुसार मन्दिर के परिसर के कण कण में जागृत रूप से विद्यमान हैं रहते है।

यह सर्वविदित है कि इष्ट देवता स्वयं मन्दिरों की अपनी सम्पत्ति के स्वत्वाधिकारी होते हैं और कानून के अनुसार उनका प्रतिनिधित्व आधिकारिक संरक्षक द्वारा किया जाता है। श्री पद्मनाम मन्दिर में यह भूमिका अरसे से त्रावणकोर के महाराजा द्वारा निभाई जाती है। त्रावणकोर एक ऐसा विशाल राज्य था जिसमें दक्षिण भारत का काफी बड़ा भाग आता था। यद्यपि स्वतंत्रता के बाद सन् १९४७ में इसका अस्तित्व जाता रहा पर इसके महाराजा आज भी श्री पद्मनाम स्वामी मन्दिर के प्रमुख के रूप में देखे जाते है– आध्यात्मिक प्रमुख व इष्ट देवता की सम्पत्ति के संरक्षक के रूप में भी। सदियों से शाही परिवार के मन्दिर के प्रबंध की कोई जांच नहीं होती थी और न ही उन पर कोई अंगुली उठाने का साहस करता था और इस बात के दस्तावेज भी सार्वजनिक नहीं थे कि महाराजा इष्ट देव की सम्पत्ति को प्रबंध की व्यवस्था कैसे करते थे अथवा ऐसी चल–अचल सम्पत्ति की मात्रा कितनी थी। पहली बार आनन्द पद्मनाम ने मन्दिर के प्रबंध के विरुद्ध २००७ में एक मुकदमा दायर किया जो दो भक्तों की ओर से था।

(शेष अगले अंक में)

भारतीय संस्कृति और नारी वैशिष्टय

✍ सुनीता कुमारी

इस जगतीतल पर पाए, जाने वाले सभी प्राणी दो वर्गों में विभाजित हैं। मादा एवं नर। नर पुरुष जाति का सूचक है वहीं मादा स्त्री जाति का। संसार में दोनों का महत्त्व समान है। लेकिन यह महत्त्व दुर्भाग्यवश सभी को मान्य नहीं है। प्रायः स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा कमजोर, अशक्त व कम प्रतिभा सम्पन्न समझा जाता है। बहुतेरे ऐसे कार्यों में इन्हें मात्र इसीलिए भागीदार नहीं माना जाता है, क्योंकि शारीरिक शक्ति से वे उनके लिए उपयुक्त नहीं है। एक दृष्टि से यह सत्य हो सकता है परन्तु सर्वाङ्ग नहीं। स्त्रियाँ शारीरिक दृष्टि से पुरुषों की अपेक्षा भले ही दुर्बल हो सकती है। परन्तु मानसिक शक्ति एवं बुद्धि कौशल में वह उनसे किसी भी क्षेत्र में कमजोर नहीं मानी जाती है। अवसर आने पर स्त्रियों ने इसे सिद्ध कर दिखाया है। लेकिन पुरुष प्रधान समाज इस तथ्य को स्वीकार करना नहीं चाहता है। अतः स्त्रियों को समाज में वह स्थान नहीं मिल पाया है, जो उन्हें प्राप्त होना चाहिए था। सौभाग्यवश इधर नए विचारों का सृजन प्रारम्भ हुआ है, परिणामतः स्त्रियों की स्थिति में होने वाले अवनति के क्रम पर रोक लगी है। आज नारी जीवन के अनेक क्षेत्रों में पुरुषों के साथ मिलकर उसी तरह से कार्य कर रही है, जिस प्रकार कभी वह प्राचीन भारतीय संस्कृति की आवश्यक अंग हुआ करती थी।

भारतीय संस्कृति और नारी

भारतीय संस्कृति में नारी को पूजनीय माना गया है। इन्हें देवी स्वरूपा समझकर इनकी आराधना की गई है। इन्हें संस्कृति का रक्षक कहा गया है। जप, तप, व्रत, संयम, नियमादि जिन्हें भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग स्वीकार किया गया है, ये सब नारी के सहयोग से ही जीवित हैं। स्त्रियाँ ही इनको अपने जीवन में निरन्तर उतार कर मनुष्य को संस्कृति का पाठ पढ़ाती हैं। माधुर्य, प्रेम, उत्सर्ग, सेवा, निष्ठा, श्रद्धा आदि मनुष्य की वे कोमल भावनाएँ हैं जिन पर धर्म, सदाचार, नैतिकता आदि सभ्याचार के प्रासाद टिके हुए हैं। इन्हें भारतीय संस्कृति का हृदय स्थल माना जाता है। नारी ही संस्कृतिं रूपी इस हृदय की धड़कन बन कर उनमें चेतना का संचार करती रहती है। इसलिए भारतीय संस्कृति में नारी को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है।

भारतीय चिन्तन में ब्रह्मा अथवा ईश्वर को चरम सत्ता माना गया है। इन्हें ही सम्पूर्ण सृष्टि का कर्ता नियन्ता तथा संहारकर्ता भी स्वीकार किया गया है। नारी भी विश्व की एक संरचना मात्र है, जिसका निर्माता वही परमपिता ब्रह्मा है, जिसने विश्व की अन्य सभी वस्तुओं का निर्माण किया। परन्तु कभी–कभी वह स्वयं नारी की महत्ता से विस्मृत हो उसके संसर्ग की कामना करता है। नारी की विशिष्टता के समक्ष सम्पूर्ण ईश्वरीय शक्तियाँ छोटी पड़ने लगती हैं। नारी ही ईश्वर की वह श्रेष्ठत रचना है जो आज तक मानवता को जीवित रखे हुए है। यही नितान्त अबोध, दुर्बल शिशु का सम्यक् लालन–पालन कर उसे इस योग्य बनाती है, ताकि वह विश्व संस्कृति के निर्माण में सहभागी बन सके। सचमुच भारतीय संस्कृति में नारी वैशिष्टय की यह पराकाष्ठा है जो उसे अत्यन्त ओजस्वी स्वरूप प्रदान करती है।

संस्कृति का प्रसंग बने और वहाँ सभ्यता का प्रश्न खड़ा न हो, यह असम्भव है। इन दोनों में अंग–अंगी परस्पर असमान होते हुए कभी अलग नहीं हो सकते, ठीक उसी तरह संस्कृति और सभ्यता को भी समझना चाहिए। संस्कृति और सभ्यता का युग्म परस्पर साथ–साथ चलता रहता है। यह ठीक है कि सभ्यता का जन्म संस्कृति के कोख से होता है, लेकिन कभी–कभी संस्कृति भी सभ्यता के नाम से पहचानी जाती है। इतना होते हुए भी संस्कृति सभ्यता से अधिक महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि यह सार्वभौमिक होती है जबकि सभ्यता परिवर्तनशील संस्कृति पर ही टिकी हुई है। सभ्यता मिट सकती है, लेकिन संस्कृति का अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होता।

संस्कृति को जीवित रखने का काम नारी ही करती है। क्योंकि यही अपने आपको संस्कृति के साथ जोड़कर रखती है। संस्कृति के साथ जुड़ना ही संस्कृति को जिन्दा रखना है। भारतीय चिन्तन मे नारी के एकनिष्ठ स्वभाव को उसकी संस्कृति कहा गया है और भारतीय नारी अपनी इस एकनिष्ठ छवि को अक्षुण्ण रखती है। इसके लिए वह प्राण पण से तत्पर रहती है। इस प्रकार वह संस्कृति की एक जीति जागती तस्वीर नजर आती है। दूसरी ओर पुरुष सभ्यता की भांति परिवर्तनशील रहता है। वह न तो भविष्य की चिन्ता करता है और न अतीत में आस्था रखता है। वह केवल वर्तमान को स्वीकार करता है। वह प्रायः सेवा भावना से दूर रहना चाहता है। यही कारण है कि उसे न अपनों से बड़ों की सेवा का चाव होता है और न ही वह अपने से छोटे बालकों के लालन –पालन में रुचि रखता है। परन्तु नारी को संस्कार रूप में मिला संस्कृति प्रेम ही उसे बड़ों का आदर करना और छोटों से प्रेम बनाए रखने की प्रेरणा प्रदान करता है।

भारतीय संस्कृति में नारी एक प्रेरणा है। यह विविध रूपों में मनुष्य के समक्ष अपनी प्रेरक छवि प्रदान करती है। कभी वह माँ बनकर ममता और वात्सल्य की देवी के रूप में सर्वत्र पूजनीय बन जाती है। कभी पत्नी के रूप में सेवा और त्याग की प्रेरणा से सम्पूर्ण जगतृ को निहाल कर देती है। कभी बहन के रूप में यह प्रेम की वह जीती जागती तस्वीर बन जाती है जो प्रत्येक मानव के मन में आदर और श्रद्धा का भाव उत्पन्न करती है। नारी चाहे कितने ही रूपों में क्यों न बंटी हुई हो प्रत्येक अवस्था में लज्जा उसका सौन्दर्य है, कोमलता उसका वैभव है, घर उसका साम्राज्य है। यही नारी का स्वभाव है, उसकी प्राकृतिक सम्पदा है। सचमुच इस रूप में यह प्रकृति की एक अनमोल देन है जिसे भारतीय संस्कृति ने प्रतिष्ठापित कर विश्व रंगमंच पर एक अनुपम सिद्धान्त प्रस्तुत किया है।

दुर्भाग्यवश आज कुछ स्त्रियाँ अपने स्वाभाविक एवं प्राकृतिक स्वरूप को त्यागकर विकृत यौन विकार का शिकार बन रही हें। वे विकृति को अपनाने में गर्व का अनुभव कर रही हैं। उनकी इस मनोविकृति के कारण सम्पूर्ण नारी जाति का गरिमा धूल–धूसरित हो रही है। उनके कारण ही आज नारी जाति का गौरव खण्डित हो रहा है। वे अपने घर रूपी राज्य का त्याग कर, प्राकृतिक सौन्दर्य को अप्राकृतिक साधनों से छिपाकर, महफिल की जीनत बनना चाह रही हैं। उनका यह रूप समाज को किसी तरह की प्रेरणा न देकर उसमें एक दुर्व्यवस्था उत्पन्न कर रही है। इनके कारण समाज में विभिन्न प्रकार की विकृतियों का जन्म हो रहा है। भारतीय संस्कृति में नारी के इस कृत्य की कभी भी प्रशंसा नहीं की गई है।

विकृतियों का शमन ही भारतीय संस्कृति की विशेषता है। भारतीय संस्कृति में उन नारियों की यशोगाथा का चित्रण बड़े ही तेजस्वी ढंग से प्रस्तुत किया गया है जिन्होंने विकृतियों को दूर करने के लिए संघर्ष किया। आज भी ऐसी स्त्रियों को समाज में आदरणीय स्थान प्राप्त है तथा उन्हें उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करने में भारतीय समाज गर्व का अनुभव करता है। उनसे प्रेरणा लेकर समाज में व्याप्त विकृतियों को मिटाने के लिए संघर्ष करता है। अतः स्त्रियों को अपने स्वाभाविक गुणों क: कभी त्याग नहीं करना चाहिए। उन्हें अपने राज्य की सीमा का कभी भी अतिक्रमण नहीं करना चाहिए। क्योंकि ये सभी कृत्य कभी भी प्रशंसनीय नहीं हो सकते हैं। इन्हें भारतीय संस्कृति कभी भी स्वीकार नहीं कर सकती हैं। हाँ! इनके आधार पर उन्हें शूर्पणखा की भांति अपमान का दंश अवश्य प्राप्त हो सकता है, सीता की तरह पूजा और आदर नहीं।

नारी शक्ति बनाम सर्वशक्ति

मनुष्य प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना है। स्त्री और पुरुष ये मानव के दो रूप हैं। अतः दोनों को सर्वश्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न होना चाहिए, समान शक्ति का धारक होना चाहिए। परन्तु दुर्भाग्यवश कुछ लोग इस विचार से सहमत नहीं होते हें। वे प्रायः यह प्रश्न खड़े करते हैं कि क्या स्त्रियों में भी कोई शक्ति होती है? यहाँ वे भूल जाते हैं कि नारी नाम ही शक्ति का पर्याय है। इसके साक्षी हैं भारतीय संस्कृति में स्वीकृत विपुल ग्रन्थ। स्त्रियाँ महान् शक्ति की धारिका है। पुरुष जो स्वयं को स्त्री जाति का रक्षक एवं अपने को शक्ति का पुंज समझता है वह भी नारी शक्ति की महत्ता के समक्ष नतमस्तक रहता है। भारतीय संस्कृति में नारी शक्ति की महिमा का गुणगान किया गया है। इसे आदिशक्ति, महाशक्ति, सर्वशक्ति मानकर इसकी पूजा अर्चना की गई है।

स्त्री विविध शक्तियों को धारण करने वाली एक ऐसी बिम्ब है जो अपनी शक्ति का प्रकाशन जनजीवन में चेतना जाग्रत करने के लिए करती रहती है। वह अपनी शक्ति के कारण स्वयं क्रियाशील तो रहती है साथ ही पुरुषों को भी शक्ति की महिता से अनुप्रेरित विनोबा भावे सदैव स्त्री को महान शक्ति की धारिका स्वीकार करते रहे हैं। उनके विचारों में नारी शक्ति का प्रस्फुटन एक नए रूप में होता है। वे कहा करते थे– स्त्रियों में तो शक्ति है ही पुरुषों में भी नारी शक्ति विद्यमान हैं। पुरुषों में नारी शक्ति। सचमुच विनोबा का यह एक विलक्षण चिन्तन है। परन्तु इसे हम आश्चर्यजनक नहीं कह सकते हैं। क्योंकि स्त्री निःसंदेह विलक्षण और परस्पर **शेष पृष्ठ 10 पर**

माघी पूर्णिमा पर विशेष

सन्त रविदास भक्ति भावना और धर्मनिष्ठा के अनन्य प्रतीक

✍ डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय

सन्तप्रवर रविदास या रैदास का जन्म विक्रम सम्वत् १५०० के आसपास हुआ। उन्होंने संत कबीर के प्रति अत्यन्त सम्मान व्यक्त किया है—'निरगुन को गुन देखो आई, देही सहित कबीर सिधाई।' इससे प्रतीत होता है कि वे कबीर के अन्त समय में विद्यमान थे। भक्तिमती मीरा ने उन्हें अपनी रचनाओं में गुरु के रूप में स्मरण किया है। 'श्रीगुरुग्रन्थ साहिब' में संत रैदास के अनेक पद उल्लिखित हैं। परम्परा से संत रैदास का जन्मदिन माघी पूर्णिमा (रविवार) मान्य है। व बनारस के आसपास ही रहे, यह भी स्वयं उनके अपने कथन से सिद्ध है—

काशी ढिंग मांडुर स्थाना,
शूद्रवरण करत गुजराना।
मांडुर नगर लीन अवतारा,
रविदास शुभनाम हमारा।

'भक्तमाल' के अनुसार इन्हें भी कबीर की तरह स्वामी रामानन्द से ही उपदेश मिला था।

'भविष्य पुराण' में इनके पिता का नाम मानदास बतलाया गया है—

चर्मकारगृहे जातो, द्वितीयः पिंगलापतिः।
मानदासस्य तनयो रैदास इति विश्रुतः।।

गुजराती भाषा में उपलब्ध साहित्य से भी इसका समर्थन होता है। जीवनयापन के लिए उन्होंने अपने पैतृक व्यवसाय चर्मकारी को ही अपना लिया था। उनके पदों से भी इसकी पुष्टि होती है। उन्होंने प्रचुर तीर्थाटन भी किया था।

सन्त रविदास ने सामान्य जनता की भाषा में सरलता से समझे जाने वाले आध्यात्मिक उपदेश दिये थे। सन्त रैदास की बानी में परमात्मा से मिलन की विकलता तथा सर्वत्र उसी के अस्तित्व की अनुभूति स्पष्ट रूप से व्यक्त हुई है—

सर्वेश्वर, सर्वांगी, सब गीत,
कर्ता हर्ता सोई।

सब कुछ करत करौं हरि कैसे, गुनविधि बहुत रहति शशि जैसे।'

पूरन ब्रह्म बसै सब ठाहीं, कह रैदास मिले सुख साईं।

ब्रह्मविषयक उनकी अभिव्यक्ति अनुभूतिजन्य है—

जानत जानत जान रह्यो सब परम कहा निज जैसा,
कहत आन अनुभवत आन रस मिले न बेगर होई।

कहीं—कहीं उपनिषदों की तरह ईश्वर को 'नेति—नेति' (इस प्रकार का नहीं) सदृश भी कहा है—

जस हरि कहिये तस हरि नाहीं, है हरि बस कछु ऐसा।

वैष्णव भक्तिभावना का उन पर विशेष प्रभाव परिलक्षित होता है। इसीलिए उनके एक पद में नाम—जप के लिए विष्णु के विभिन्न नामों का उल्लेख है—

जपो राम गोविन्द बीठल वासुदेव
हरि विष्णु बैकुण्ठ मधुकीट भारी।
कृस्न केशौ रखीकेश कवलाकान्त
अहो भगवन्त त्रिविधि सन्तापहारी।।

लेकिन नाम—रूप से परे जाकर, एकस्तर पर रैदास ने अन्तर्मन की अपनी अनुभूति को विशेष महत्त्व दिया है—

जो जोइ पूजिय सोइ सोइ कांची सहजभाव सत होई।
कहै रैदास मैं ताहि को पूजे जाके ठाँव-ठाँव नहिं कोई।।

मानव—जीवन उनकी दृष्टि में हीरे की तरह है, जिसे हम भौतिका सुख—सुविधाओं के वश में होकर ओझल कर देते हैं। उनकी चेतावनी है—

रैन गँवाई सोइ करि, दिवस गँवायो खाय।
हीरा जनम अमोल है कौड़ी बदले जाय।।
हरि-सा हीरा छाँड़ि के करै आन की आस।
ते नर जमपुर जाहिंगे, सत भाषै रैदास।।

सन्त रविदास के द्वारा प्रणीत कुछ अन्य प्रेरक पद यहाँ प्रस्तुत हैं, जिनमें उनकी निश्छल भक्ति—भावना प्रकट हुई है—

प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी,
जाकी अंग-अंग बास समानी।
प्रभु जी तुम घन वन हम मोरा, जैसे चितवत चन्द चकोरा।
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती,
जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभु जी तुम मोती हम धागा,
जैसे सोने मिलत सुहागा।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा,
ऐसी भक्ति करै रैदासा।

× × × × ×

रे चित चेत अचेत काहे न बाल्मीकहीं देख रे।
किस जाति ते, किह पदहिं अमर्‌रयो राम भक्ति विशेष रे।
अजामील गज गणिका तारी,
काटी कुंजर फाँस रे।
गणिका थी किस कर्मा जोग,
पर पुरसनसों करती भोग।

× × × × ×

राम बिन जो कछु कहिये सो सब भरम कहाई

× × × × ×

कह रैदास भक्ति एक उपजी सहजै होय सहाई।

× × × × ×

धन्य हरिभक्ति त्रलौक यश पावनी।

× × × × ×

सतय सनेह इष्ट अंगलावै,
अस्थल अस्थल खेलै।
हरिजन हरि बिन और न जाने, तजै आन तन त्यागी।
रैदास रात न सोइये, दिवस न करिये स्वाद।
अस निसि हरि जी सुमिरिये छाँड़ि सकल प्रतिवाद।
सब सुख पावैं जासु ते साो हरि जू के दास।
कोऊ दुःख पावै जास ते सो न दास हरिदास।

× × × × ×

पीव संग प्रेम कहबूँ नहि पायो, करनी कवन बिसारी।
चक को ध्यान, दधि सुत सों ज्यों हैं, त्यों तुम तें मैं न्यारी।
भोर भयो मोह एकटक जोवत, तलफत रजनी जाई।
पीव बिना सेज को कहा सुख, विरह बिथा तन खाई।
मेटि दुहाग सुहागिन कीजै अपने अंग लगाई।
कहैं रैदास स्वामि तें बिछुरे एक पलक जुग आई।

× × × × ×

जिकि कुल साधु वैष्णो होय वरन अवरन रंकु नहिं ईसुर विमल जासु जानिअै सब कोय।।

× × × × ×

हृदय सुमिरन करूँ, नैन अवलोकन, श्रवणो हरिकथा पुरिराखों।
मन सु मधुकर करूँ, चरनन चित धरूँ, राम रसायन रसना चाखूँ।।

× × × × ×

मृग, मीन, भृंग, पतंग, कुंजर, एक दोष विनास।
पंच दोष असाध जामहिं कौन ताकी आस।

× × × × ×

त्रिगुन योनी अचेत सम्भव पाप पुन्य असोच।
मानुषावतार दुर्लभ, तिहूं संगति पोच।

× × × × ×

चलि मन हरि चटसाल पढ़ाऊँ।
गुरु की साटि, ज्ञान का अक्षर, बिसरत सहज समाधि लगाऊँ।
प्रेम की पाटी, सुरति कर लेखनि, रर्रा-मझ लिखि आँक दिखाऊँ।
इहि विधि मुक्त भये सनकादिक, हृदय विचार प्रकाश दिखाऊँ।।
कागद कैवल मति मसिकर निर्मल बिन रसना निसिदिन गुण गाऊँ।
कह रैदास राम भजि भाई, सन्त साखि दै बहुरि न आऊँ।।

सुल्तान सिकन्दर लोदी ने सन्त रविदास जी को मुसलमान बनाने के लिए प्रलोभन तथा दबाव दोनों ही नीतियाँ अपनायीं, लोगों को उनके पास भेजा; किन्तु उनका उत्तर सीधा—सपाट था। वे बार—बार हिन्दू धर्म में अपनी श्रद्धा, निष्ठा तथा आस्था व्यक्त करते रहे—

शेष पृष्ठ 11 पर

शिवाजी ने परकल्याण के लिए स्वयं को बन्दी बनाया

शिवाजी वेश बदलकर विनायक देव नामक एक दरिद्र ब्राम्हण के घर रुके। वह बेहद गरीब व्यक्ति था। शिवाजी ने उसकी आर्थिक मदद करने की ठानी और एक योजना बनाकर निवनायक को दो हजार अशर्फिया दिलवा दी। उन दिनों शिवाजी मुगल सेना से बचने के लिए वेश बदलकर रहते थे। इसी क्रम में एक दिन शिवाजी एक दरिद्र ब्राम्हण के घर यके। ब्राम्हण का नाम विनायक देव था। वह अपनी माँ के साथ रहता था। विनायक भिक्षावृत्ति कर अपना जीवनयापन करता था। अति निर्धनता के बावजूद उसने शिवाजी का यथाशक्ति सत्कार किया। एक दिन जब वह भिक्षाटन के लिए निकला, तो शाम तक उसके पास बहुत ही कम अन्न एकत्रित हो पाया। वह घर गय तथा भोजन बनाकर शिवाजी और अपनी माँ को खिला दिया। वह स्वयं भूखा ही रहा। शिवाजी को अपने आश्रयदाता की यह दरिद्रता भीतर तक चुभ गई। उन्होंने सोचा कि किसी तरह उसकी मदद की जाए। शिवाजी ने उसी समय विनायक की दरिद्रता दूर करने का दूसरा उपाय सोचा। उन्होंने एक पत्र वहाँ के मुगल सूबेदार को भिजवाया। पत्र में लिखा था कि शिवाजी इस ब्राम्हण के घर रूके हैं। अतः उन्हें पकड़ लें और इस सूचना के लिए इस ब्राम्हण को दो हजार अशर्फियाँ दे दें। सूबेदार शिवाजी की चरित्रगत ईमानदारी और बड़प्पन को जानता था। अतः उसने विनायक को दो हजार अशर्फियां दे दी और शिवाजी को गिरफ्तार कर लिया। बाद में तानाजी से यह सुनकर कि उसके अतिथि और कोई नहीं स्वयं शिवाजी महाराज थे, विनायक छाती पीट—पीटकर रोने लगा और मूर्छित हो गया। तब तानाजी ने उसे सांत्वना दी और बीच मार्ग में ही सूबेदार से संघर्ष कर शिवाजी को मुक्त करा लिया। वस्तुतः महान होने की सच्ची कसौटी यही आभार भाव है, जो किसी सामान्य व्यक्ति द्वारा की गई छोटी सी सहायता पर भी विनम्रता से प्रकट किया जाता है।

सच्ची श्रद्धा के महामानव स्वामी श्रद्धानन्द

✍ श्री रामपथिक भिक्षु

अन्ध श्रद्धालु कहीं का रहता नहीं, तो सच्चा श्रद्धालु कहाँ से कहाँ पहुँच सकता है, इसकी सीमा नहीं है। हाँ इस मायावी जगत् में ऐसे श्रद्धालु की परीक्षाएँ भी खूब होती हैं। इनमें खरा उतरना है मुंशीराम जैसा ही।.....

बालक मुंशीराम बचपन से मननशील था। पहले महात्मा मुंशीराम, फिर स्वामी श्रद्धानन्द।

श्रद्धा से जलती है अग्नि
श्रद्धा से होता हवि दान।
भौतिक धन से बड़ी है,
श्रद्धा से ही मिलते भगवान्।।

श्रद्धा वह गुलाब का पुष्प है, जिसकी महक से महकता है वायुमंडल, जबकि खिलती है काँटों भरी टहनी पर। राह पर फूल बिखेरना तथा मार्ग से काँटे चुगना। कुछ क्या, अधिकतर व्यक्ति काँटे बिखेरते हैं, परन्तु मुंशीराम से बने श्रद्धानन्द ने काँटे चुगना ही अपनाया था।.....

महर्षि दयानन्द के पहले ही व्याख्यान ने जादू सा कर दिया था, जबकि सुनने का मन भी न था; पूज्य पिता की आज्ञा थी। जब कहता था कि संस्कृत बोलने वाले साधू तो पाखंडी–ढोंग होते हैं। उन दिनों अंग्रेजी के नावेल पढ़ता था युवा मुंशीराम। उठती जवानी के संग कोतवाल का बेटा होने के कारण जहाँ मटरगश्ती करता, तो मांस शराब आदि अनेक बुराइयों में ग्रस्त था मुंशीराम।

मुंशीराम के हृदय पटल पर महर्षि का प्रभाव पड़ा तो सोचा कि इस साधू की दिनचर्या भी गहराई से देखनी चाहिए, कि इसकी कथनी और करनी एक है या नहीं? ठान ली परीक्षा लेने की। प्रातः भ्रमण को जाते हैं महर्षि, तो ४ बजे जिस ओर जाते थे, उस मार्ग पर पहुँचे। ठीक समय पर भेंट हुई। चाल तेज थी, आगे था तिराहा। किस ओर गए, पता न लगा। अगले दिन तिराहे पर जा खड़े हुए। मिलने पर तेज चलने लगे। दूरी बढ़ने के कारण फिर दौड़ कर पीछा किया। साँस फूला, परन्तु धुन के धनी ने हिम्मत न हारी। प्रातः की दिनचर्या थोड़ी दूर से देखता रहा मुंशीराम।

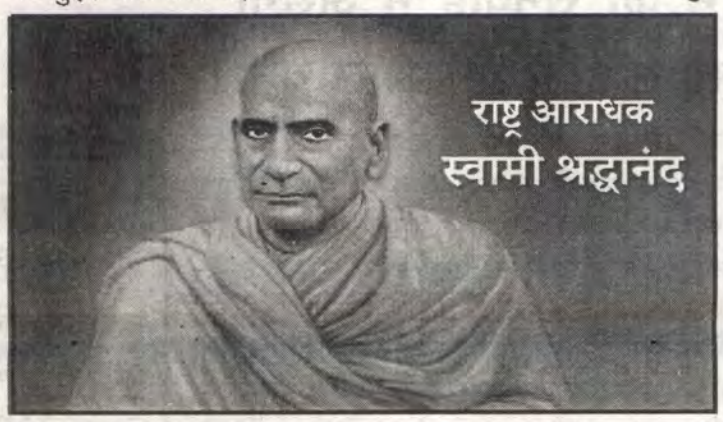

व्याख्यान के बाद समय माँगकर शंकाओं का निवारण किया, तो श्रद्धा बढ़ी। परन्तु मन–मस्तिष्क पर जो संस्कारों के नास्तिकता के बादल पूर्णता से न छंटे तो श्री चरणों से कहा खुले मन से–"आप पर श्रद्धा हुई, परन्तु ईश्वर पर क्यों नहीं श्रद्धा हो रही मेरी"?

महर्षि दयानन्द का दो टूक उत्तर था; 'तुमने सवाल किए, मैंने जवाब दिए। कब कहा था मैंने तुमसे ईश्वर दर्शन कराने और श्रद्धा बढ़ाने को?.... ईश्वर की जब तुम पर स्वतः कृपा होगी, तभी सच्ची श्रद्धा होगी। फिर साक्षात्कार अंतरात्मा में निरन्तर करते रहो अभ्यास!'.....

पं. गुरुदत्त ने भी वैसे ही प्रश्न किए थे, तो पं. लेखराम ने भी, जैसे नरेन्द्र (विवेकानन्द) ने स्वामी रामकृष्ण परमहंस से किए थे। महर्षि का रंग (जादू) इतना चढ़ा कि दयानन्द के रंग में रंग गया मुंशीराम। फिर महात्मा मुंशीराम कहे जाने लगे। मेरा रंग दे बसन्ती चोला। संन्यास लेने से पूर्व सर्वस्व समर्पण कर दिया, वंश क्रम से। गुरुकुल कांगड़ी (वर्तमान) की स्थापना हुई थी दान में मिली कांगड़ी ग्राम के निकट भूमि में, जिसे अब पुण्यस्थली कहते हैं। चारों ओर गंगा में घिर जाने के कारण ही इसे वर्तमान स्थान पर लाए थे स्वामी श्रद्धानन्द महाराज।

राष्ट्रभक्ति के रंग में रंगे, तो हिन्दू मुस्लिम एकता के नेता कहलाए। दिल्ली के जामा मस्जिद पर वेद मंत्रों से शुरू किया भाषण, तो समाप्ति भी की वेद मंत्रों से। आजतक किसी को यह श्रेय प्राप्त न हुआ। ऐसे थे वेद के श्रद्धालु श्रद्धानन्द!!!

चांदनी चौक (जहाँ स्वामी श्रद्धानन्द की प्रतिमा लगी है) पर स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु शांत जुलूस चल रहा था, तो फौज ने रोक दिया। तभी आगे बढ़ कर कहा–'क्यों रोका गया, जबकि हम पूर्ण शांति से जा रहे हैं?' एक गोरखे ने बंदूक की नोक पर लगी किरच स्वामी जी की छाती पर तान कर कहा–'आगे नहीं।' छाती खोलकर कड़कती बोली से बोले–'मारो गोलियाँ, किरच घुसा दो। हम रुकेंगे नहीं, आगे जाएँगे शान्ति से।' अद्‌भुत दृश्य देखकर दूर से अंग्रेजी अफसर घोड़े पर पहुँचा, वीर की वीरता से प्रभावित हो कहा–'जुलूस को जाने दो।'

भारत निर्वाचन आयोग

संवैधानिक निकाय

भारत एक समाजवादी, धर्म निरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य एवं विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। आधुनिक भारतीय राष्ट्र राज्य १५ अगस्त, १९४७ को अस्तित्व में आया था। तब से संविधान में प्रतिष्ठापित सिद्धान्तों, निर्वाचन विधियों तथा पद्धति के अनुसार नियमित अन्तरालों पर स्वतंत्र तथा निष्पक्ष निर्वाचनों का संचालन किया गया है। भारत के संविधान के संसद और प्रत्येक राज्य के विधान मंडल तथा भारत के राष्ट्रपति और उप राष्ट्रपति के पदों के निर्वाचनों के संचालन की पूरी प्रक्रिया का अधीक्षण, निदेशन तथा नियंत्रण का उत्तरदायित्व भारत निर्वाचन आयोग को सौंपा है। भारत निर्वाचन आयोग एक स्थायी संवैधानिक निकाय है। संविधान के अनुसार निर्वाचन आयोग की स्थापना २५ जनवरी, १९५० को की गई थी। प्रारम्भ में, आयोग में केवल एक मुख्य निर्वाचन आयुक्त थे। वर्तमान में इसमें एक मुख्य निर्वाचन आयुक्त और दो निर्वाचन आयुक्त हैं।

१६ अक्तूबर, १९८९ को पहली बार दो अतिरिक्त आयुक्तों की नियुक्ति की गई थी परन्तु उनका कार्यकाल बहुत कम था जो ०१ जनवरी, १९९० तक चला। तत्पश्चात् ०१ अक्तूबर, १९९३ को दो अतिरिक्त निर्वाचन आयुक्तों की नियुक्ति की गई थी। तब से आयोग की बहु–सदस्यीय अवधारणा प्रचलन में है, जिसमें निर्णय बहुमत के आधार पर लिया जाता है।

आयुक्तों की नियुक्ति एवं कार्यकाल

मुख्य निर्वाचन आयुक्त एवं निर्वाचन आयुक्तों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। उनका कार्यकाल ६ वर्ष की आयु तक, इनमें से जो भी पहले हो, तक का होता है। उनका वही स्तर होता है जो कि भारत के उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों का होता है तथा उन्हें उनके समतुल्य ही वेतन और अनुलाभ मिलते हैं। मुख्य निर्वाचन आयुक्त को पद से, केवल संसद द्वारा महाभियोग के माध्यम से हटाया जा सकता है।

कार्य निष्पादन

आयोग अपने कार्यों का निष्पादन, नियमित बैठकों के आयोजन और दस्तावेजों के परिचालन द्वारा करता है। आयोग द्वारा निर्णय लेने की प्रक्रिया में सभी निर्वाचन आयुक्तों के पास समान अधिकार होते हैं। समय–सयम पर आयोग अपने सचिवालय में अपने अधिकारियों को कुछ कार्यकारी प्रकायों का प्रत्यायोजन करता है। आयोग का नई दिल्ली में एक पृथक सचिवालय है जिसमें लगभग ३०० अधिकारी/कर्मचारी पदानुक्रम रूप से कार्य करते हैं।

आयोग के कार्यों में सहयोग देने के लिए सचिवालय के वरिष्ठतम अधिकारी के रूप में दो या तीन उप निर्वाचन आयुक्त और महानिदेशक होते हैं। वे सामान्यतः देश की राष्ट्रीय सिविल सेवा से नियुक्त किए जाते हैं और उनका चयन व कार्यकाल सहित उनकी नियुक्ति आयोग द्वारा की जाती है। इसी तरह से, निदेशक, प्रधान सचिव, सचिव, अवर सचिव और उप निदेशक, उप निर्वाचन आयुक्तों और महानिदेशको को सहयोग देते हैं। आयोग में कार्य का प्रकार्यात्मक और प्रादेशिक वितरण किया गया है। कार्य को डिवीजनों, शाखाओं और अनुभागों मे वितरित किया गया है। उल्लिखित इकाईयों में से प्रत्येक आखिरी इकाई अनुभाग अधिकारी के प्रभार में होती है। मुख्य प्रकार्यात्मक प्रभाग है योजना, न्यायिक, प्रशासन, सुव्यवस्थित मतदाता शिक्षा एवं निर्वाचक सहभागिता (स्वीप), सूचना प्रणालियाँ, मीडिया और सचिवालय समन्वयन। विभिन्न ज़ोन के लिए उत्तरदायी पृथक–इकाइयों के मध्य प्रादेशिक कार्य का बँटवारा किया गया है जिसके लिए प्रबन्धन की सुविधा हेतु देष के ३५ संघटक राज्यों और संघ राज्य–क्षेत्रों को समूहीकृत किया गया है।

राज्य स्तर पर निर्वाचन कार्य का अधीक्षण राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी द्वारा आयोग के समग्र अधीक्षण, निदेशन और नियंत्रण के अधीन किया जाता है, इन मुख्य निर्वाचन अधिकारियों की नियुक्ति सम्बन्धित राज्य सरकार द्वारा प्रस्तावित वरिष्ठ सिविल सेवकों में से आयोग द्वारा की जाती है। अधिकतर राज्यों में वे एक पूर्णकालिक अधिकारी होते हैं और उनके पास सहायक स्टाफ की छोटी सी एक टीम होती है।

जिला एवं निर्वाचन क्षेत्र स्तरों पर जिला निर्वाचन अधिकारी, निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी और रिटर्निंग अधिकारी होते हैं जिन्हें बड़ी संख्या में कनिष्ठ पदाधिकारियों का सहयोग मिलता है और वे निर्वाचन कार्य निष्पादित करते हैं। वे सभी अपने अन्य दायित्वों के अतिरिक्त निर्वाचनों से सम्बन्धित अपने प्रकार्यों का भी निष्पादन करते हैं। तथापि, निर्वाचन के दौरान, वे आयोग के लिए कमोबेश, पूर्णकालिक आधार

शेष पृष्ठ 11 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

राम मंदिर मुकदमे की सुनवाई में अड़ंगा लगाने की हिन्दू महासभा ने की आलोचना।

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक एवं राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा ने उच्चमत न्यायालय में अयोध्या स्थित श्री रामजन्मस्थान मुकदमे की सुनवाई में सुन्नी बक्फ बोर्ड एवं कांग्रेस पार्टी के वकील राजीव धवन द्वारा बार–बार अड़ंगे लगाने की तीव्र आलोचना की है। हिन्दू महासभा नेताओं ने कहा है कि कभी अनुवाद के नाम पर, कभी संविधान पीठ के नाम पर और कभी किसी न्यायमूर्ति पर बेबुनियाद आरोप लगाकर सुनवाई की तारीख बार–बार आगे बढ़वाकर राजीव धवन देश के १०० करोड़ हिन्दुओं की भावनाओं के साथ खिलवाड़ कर रहें हैं। मर्यादा पुरूषोत्तम राम हिन्दुओं एवं हिन्दू राष्ट्र भारत की पहचान व प्रेरणाश्रोत हैं। वे भारतीय संस्कृति के प्रतीक हैं। उनके जन्मस्थान पर मंदिर बनाने में बाधा डालकर कांग्रेस पार्टी व सुन्नी वक्फ बोर्ड के वकील हिन्दुओं के साथ विश्वासघात कर रहे हैं। राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी एवं राष्ट्रीय प्रवक्ता पं० प्रमोद जोशी ने कहा है कि विदेशी यात्रियों के ग्रथों, विवादित ढ़ांचे के उत्खनन से प्राप्त अवषेशों, तुलसीदास कृत दोहा शतक, १६३६ में वक्फ के विधान में राम मंदिर को वक्फ संपति नहीं बनना, १६४१ में फैजाबाद नजूल विभाग द्वारा श्रीराम जन्मभूमि मंदिर परिसर, रामकोट अयोध्या ६७.७७ एकड़ भूमि क्र. ५८३ में पंजीकृत करने, शिया या सुन्नी वक्फ बोर्ड द्वारा विवादित भूमि के रख रखाव में कोई रूचि नहीं लेने तथा १६ जून १६४६ को इस भूमि का ट्रस्ट श्रीपंचरामानंदीय निर्मोही अखाड़ा द्वारा पंजीकृत कराने आदि प्रमाण से साबित होता है कि यह स्थान श्रीराम जन्म स्थान ही है।

शेष पृष्ठ 7 का **भारतीय संस्कृति और नारी.....**

विरोधी गुणों से युक्त परमशक्ति सम्पन्न प्राणी है। एक ओर यदि वह अबला तथा रक्षण करने योग्य हैं तो दूसरी तरफ वह सबला भी है। भारतीय संस्कृति में नारी शक्ति को विलक्षण रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसकी महनीयता का चित्रण करते हुए इसे अपरमपार कहा गया है। नारी को उसकी शक्ति के कारण 'जगत जननी' जैसे विशेषणों से अलंकृत किया गया है। इसकी शक्ति की आराधना नारी–प्रतिमाओं के रूप में की जाती है। यही नारी शक्ति महान विभूति सम्पन्न महिषासुर, भस्मासुर के आतंक से मानवता को उस समय त्राण दिलाती है जब समस्त शक्तियाँ पराभूत हो चुकी होती हैं। सृष्टि प्रक्रिया का प्रारम्भ हो अथवा विध्वंसकारी शक्तियों के अंत करने का प्रश्न हो, प्रत्येक अवस्था में नारी शक्ति ने मानवता की रक्षा के लिए विविध रूपों को धारण किया है। अर्द्धनारीश्वर सृष्टि प्रक्रिया की व्याख्या करता है तो दुर्गा, काली आदि विध्वंसकारी शक्तियों का अन्त करने वाली नारी शक्ति का जीवन रूप हैं। सचमुच नारी शक्ति ही आदि शक्ति है। यही सर्वशक्ति है। इससे इतर और किसी शक्ति की परिकल्पना भारतीय संस्कृति में उपलब्ध नहीं हैं। यहाँ विविध शक्तियों का प्रारम्भ इसी आदि शक्ति से निःसृत माना गया है।

भारतीय संस्कृति और नारी पर्याय

भारतीय संस्कृति में नारी वैशिष्टय के परिचायक उसके विविध नाम हैं। नारी विभिन्न गुणों से युक्त होती है और इन गुणों के आधार पर यह विभिन्न नामों से जानी जाती है। इनके गुणों के प्रदर्शन करने वाले कुछ प्रमुख नाम हैं– स्त्री, नारी, महिला, सुन्दरी, प्रमदा, मानिनी, दुहिता, अबला, ललना, ग्ना, मेना, जाया, वामा, योधा आदि। ये सभी शब्द भारतीय संस्कृति में नारी वैशिष्टय को उजागर करते हैं। क्योंकि ये मात्र नारी के अस्तित्व के बोधक ही नहीं, बल्कि अपने अन्दर से एक इतिहास का जन्म देते हैं जो भारतीय संस्कृति का एक उज्जवल पक्ष है। कारण प्रत्येक शब्द अपने वाच्यार्थ के रूप में एक संकेत प्रस्तुत करता है जो उसकी महत्ता और विशिष्टता का बोधक भी होता है। स्त्री, स्त्री शब्द 'सत्यै' धातु से बना है। यास्क के मतानुसार 'सत्यै' का अर्थ लज्जा से सिकुड़ना है। लज्जा स्त्री का प्रधान गुण है। अतः स्त्री को स्त्री इसलिए कहते हैं, क्योंकि वह लजाती है।

नारी : नारी शब्द 'नृ' अथवा 'नर' से बना है। नृ+अस्+ङीप्–नारी। यास्क ने नर शब्द को 'नृत्' नाचना से बनाया है। इसी विशेषण के आधार पर स्त्री को नारी कहा गया है। कहीं–कहीं इसके लिए 'नारीः' पाठ मिलता है।

ललना : ललना शब्द 'लल' अर्थात् इच्छा करने से बना है। स्त्री में लालसा, इच्छा, चाह आदि की प्रबलता रहती है। अतः वह ललना कहलाती है।

मानिनी : मानिनी शब्द स्त्री के मनोवैज्ञानिक पक्ष को उजागर करता है। वह मानप्रिय, स्वाभिमानी, आत्म सम्मान की भावना से युक्त होती है। उसके सौन्दर्य, गुण, कार्य आदि की प्रतिकूल आलोचना होने से वह आहत होती है। वह ऐसी आलोचना के बर्दाश्त नहीं कर सकती। अतः वह मानिनी होती है।

सुन्दरी : सु+उन्द (गीला करना)+ अर+ङीप सुन्दरी। नारी को सुन्दरी इसलिए कहते हैं क्योंकि उसे देखने मात्र से पुरुष का ह्रदय द्रवित (गीला) हो उठता है।

पाणिग्रहीता : 'पाणि' अर्थात् विवाह के पश्चात् स्त्री–पुरुष की पत्नी बन जाती है इसलिए नारी सहधर्मिणी कहलाती है।

कुटुम्बिनी : पति पुत्र अथवा कुटुम्ब के पोषण करने के कारण स्त्री कुटुम्बिनी के नाम से जानी जाती है।

उपर्युक्त चिन्तन भारतीय संस्कृति में परिव्याप्त नारी वैशिष्टय की झांकी प्रस्तुत करता है।

हिन्दू समाज सावधान

यदि हिन्दू समाज अपने चारों ओर विकसित हो रही घातक परिस्थितियों की अनदेखी करता है तो यह उसकी मूर्खता होगी। एक ऐसी मूर्खता जो उसे आत्महत्या की ओर ले जा रही है।

क्या हम आत्महत्या करना चाहते हैं?

नहीं

हम स्वाभिमानी समाज की भांति जियेंगे

पर कैसे?

क्या जातिवाद, राजनीतिक स्वार्थ, व्यक्तिगत अहंकार और विनाशकारी निजीत्व, हमारे अस्तित्व की रक्षा कर सकेगा?

नहीं

हम परिस्थितियों को समझें और दृढ़ता के साथ हिन्दुत्व को सबल बनायें।

यह आपका या मेरा कार्य नहीं है। ईश्वरीय कार्य है

निम्न बातों पर ध्यान दें :–

1. प्रतिदिन ईश आराधना करें।
2. मन को शान्त, विनम्र, धैर्यवान रखते हुए हिन्दुत्व के तत्त्व ज्ञान का प्रचार करें।
3. हिन्दुत्व की श्रेष्ठता से सबको अवगत करायें।
4. प्रत्येक ग्राम, कस्बे और मौहल्ले में प्रतिदिन या साप्ताहिक सामूहिक आरती की जाये। आरती समितियाँ बनें। जिसमें वंचित समाज को सम्मानजनक स्थान मिले।
5. प्रयास होना चाहिये कि प्रत्येक घर में वेद, गीता और रामायण अवश्य हो।
6. अपने बच्चों को हिन्दुत्व के संस्कार दें।
7. घर में तुलसी जी और एक फूल का पौधे अवश्य लगायें, यह किसी निष्ठावान हिन्दू के घर की पहचान होती है, साथ ही घर का वातावरण भी स्वास्थ्यवर्द्धक होता है।
8. हिन्दू धर्म में सनातन, आर्यसमाज, बौध, जैन और सिक्ख आदि आते हैं, इनके धर्म ग्रन्थों और आराध्य महापुरुषों और गुरुओं को सम्मान दें।
9. प्रत्येक माह प्रभात फेरी निकाले, वंचित समाज को प्रेरित करें कि वे मन्दिरों में प्रतिदिन आयें।
10. वंचित समाज के शिक्षित युवा भी धर्म प्रचार में लग जायें और जाति व्यवस्था को तोड़ने का अभियान में जी जान से लगें।

हिन्दू केवल हिन्दू होता है, उसकी जाति नहीं होती

धर्म की रक्षा करें, धर्म हमारी करेगा।

शेष पृष्ठ 4 का

संयम की शुरूआत है....

जब आपका कुछ भी खाने का मन नहीं करेगा। उस दिन आपको नहीं खाना चाहिए। हर चक्र में तीन दिन ऐसे होते है जिनमें आपके शरीर को भोजन की आवश्यकता नहीं होती। अगर आप अपने शरीर को लेकर सजग हो जाएंगे तो आपको खुद भी इस बात का अहसास हो जाएगा कि इन दिनों में शरीर को भोजन की जरूरत नहीं होती। इनमें से किसी भी एक दिन आप बिना भोजन के आराम से रह सकते है। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि कुत्ते और बिल्लियों के आरंभ इतनी सजगता होती है। कभी गौर से देखे किसी खास दिन ये कुछ भी नहीं खाते। अपने सिस्टम के प्रति वे पूरी तरह सजग होते हैं जिस दिन सिस्टम कहता है कि आज खाना नहीं चाहए वह दिन उसके लिए शरीर की सफाई का दिन बन जाता है और उस दिन वे कुछ भी नहीं खाते। अब आपके भीतर तो इतनी जागरूकता नहीं कि आप उन खास दिनों को पहचान सके। फिर क्या किया जाए। बस इस समस्या के समाधन के लिए अपने यहां एकादशी का दिन तय कर दिया गया है। हिदी महीनों के हिसाब से देखें तो हर १४ दिन में एक बार एकादशी आती है। इसका मतलब हुआ कि हर १४ दिनों में आप एक दिन बिना खाए रह सकते है। अगर आप बिना कुछ खाए रह ही नहीं सकते या आपका कामकाज ऐसा है जिसके चलते भूखा रहना आपके वश में नहीं है और भूखे रहने के लिए जिस साधना की जरूरत होती है वह भी आपके पास नहीं है तो आप हल्का फलाहार ले सके हैं। कुल मिलाकर बात इतनी है कि बस अपने सिस्टम के प्रति जागरूक हो जाएं और यह देखने की कोशिश करें कि कुछ दिन ऐसे हैं जिनमें आपको खाने की आवश्यकता महसूस नहीं होती। इन दिनांक जबर्दस्ती खाना अच्छी बात नहीं है।

शेष पृष्ठ 9 का

भारत का निर्वाचन.....

पर उपलब्ध होते हैं। देश व्यापी स्तर पर साधारण निर्वाचन का संचालन करने के लिए अति विशाल कार्यबल में लगभग पाँच मिलियन निर्वाचन कर्मी एवं सिविल पुलिस बल शामिल हैं। यह विशाल निर्वाचन तंत्र निर्वाचन आयोग की प्रतिनियुक्ति पर माना जाता है और निर्वाचन तंत्र निर्वाचन आयोग की प्रतिनियुक्ति पर माना जाता है और निर्वाचन अवधि, जो डेढ़ से दो महीनों की अवधि तक विस्तारित होती है, के दौरान उसके नियंत्रण, अधीक्षण एवं अनुशासन के अधीन होता है।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....150/- रुपये

द्विवार्षिक.....300/- रुपये

आजीवन सदस्य.....1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

***पता :-* हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001**

***नोट :-* केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।**

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 5 का

जानें ऐसा क्यों होता.....

रूप में जाता है और यही जल संघनन होकर वर्षा के रूप में जमीन पर गिरता है लेकिन जब आकश में नमी अधिक होती है तो ये बूंदे बर्फ का रूप ले लेती है और जब इस बर्फ की मात्रा आकाश में अथिक हो जाती है तो ये बर्फ जमीन पर ओलो के रूप में गिरती है। ओले कुछ बड़े और कुछ छोटे टुकड़ों के रूप में गिरते हैं, जो टुकड़े अधिक छोटे होते हैं ये वायुमडल में प्रवेश करते ही वायुमंडल की गर्म हवा के संपर्क में आते ही पिघल जाते हैं और जो बड़े टुकड़े होते हैं वे पिघल नहीं पाते हैं और छोटे–छोटे बर्फ के टुकड़ों के रूप में बरसते हैं, यही कारण है कि ओलों की वर्षा होती है और आलो की वर्षा के साथ बूंदे गिरती है।

शेष पृष्ठ 8 का

सन्त रविदास भक्ति भावना.....

'वेद धरम हैं पूरन धरमा, वेद अतिरिक्त और सब भरमा।
वेद धरम की सच्ची रीता, और सब धरम कपोल प्रतीता।
वेद वाक्य उत्तम धरम, निर्मल वाका ग्यान।
यह सच्चा मत छोड़कर, मैं क्यों पढ़ूँ कुरान।
श्रुति-सास्त्र-स्मृति गाई, प्राण जाय पर धरम न जाई।
कुरान बहिश्त न चाहिए, मुझको हूर हजार।
वेद धरम त्यागूँ नहीं, जो गले चलै कटार।।
वेद धरम है पूरण धरमा, करि कल्याण मिटावे भरमा।
सत्य सनातन वेद हैं, ज्ञान कर्म मर्याद।
जो ना जाने वेद को, वृथा करे बकवाद।।'

सिकन्दर लोदी ने सन्त रविदास को कठोर दण्ड देने की धमकी दी, तो उन्होंने निर्भीकता के साथ उत्तर दिया–

'मैं नहीं दब्बू बाल गंवारा, गंग त्याग गहूँ ताल किनारा।
प्राण तजूँ पर धर्म न देऊँ, तुमसे शाह सत्य कह देऊँ।
चोटी शिखा कबहुँ नहिं त्यागूँ, वस्त्र समेत देह भल त्यागूँ।
कंठ कृपाण का करौ प्रहारा, चाहें डुबावो सिन्धु मंझारा।।'

मुस्लिम आतंक के उस कठिन काल में भी सन्त रविदास ने सच्ची भक्ति की निर्मल गंगा प्रवाहित की।

शेष पृष्ठ 1 का

उत्तर प्रदेश में एक.....

जानकारी के मुताबिक मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एक बार फिर किसानों को नये साल का तोहफा देने के मूड में हैं। यानी की योगी सरकार एक इस साल लोकसभा चुनाव से पहले किसानों का कर्जा मांफ कर सकती हैं। उत्तर प्रदेश सरकार जिला स्तर पर कर्ज माफी के लिए सर्वे करवा रही है। इस सर्वे का मकसद उन किसानों की पहचान करना है जो पिछली बार कर्ज माफी का लाभ नहीं उठा पाए थे। बता दें कि उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव के दौरान बीजेपी सरकार ने किसानों का कर्ज माफ करने का वादा किया था। चुनाव जीतने के बाद बीजेपी सरकार ने किसानों का कर्ज माफ भी किया था। प्रदेश में जब योगी सरकार ने आते ही किसानों का कर्ज मांफ किया था तब कई किसानों को आंशिक कर्जमाफी ही मिल पाई थी। उस दौरान बहुत से किसान तकनीकी गड़बड़ियों की वजह से कर्जमाफी का लाभ भी नहीं उठा पाए थे। योगी सरकार इस सर्वे के द्वारा ऐसे किसानों की पहचान करने की कोशिश कर रही है। अगर योगी सरकार इस कदम को अमली जामा पहनाती है तो लोकसभा चुनाव से पहले किसानों को लुभाने की कोशिश में इसे बड़ी कवायद माना जा सकता है। अब यह योजना वास्तविक धरातल पर कब आ पाएगी, यह तो आने वाला समय ही बताएगा। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने सरकार से हिन्दुस्तान के किसानों की समस्याओं को दूर तुरन्त दूर करने की मांग की है।

शेष पृष्ठ 1 का

कुंभ से सरकार को होगी.....

मिलेगा। इसके अलावा पड़ोस के राज्यों राजस्थान, उत्तराखंड, पंजाब और हिमाचल प्रदेश को भी इसका फायदा होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि कुंभ में शामिल होने वाले पर्यटक इन राज्यों के पर्यटन स्थलों पर भी जा सकते हैं। कुंभ मेले में करीब १५ करोड़ लोगों के आने की संभावना है। दुनिया का यह सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन पूरी दुनिया में अपनी आध्यात्मिकता और विलक्षणता के लिए प्रसिद्ध है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा है कि कुंभ भारतीय आध्यात्मिकता का प्रतीक है। हमें इसमें श्रद्धालुओं की सुख–सुविधा का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं:-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2019-20-21
रजि सं. 29007/77

12 साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता निष्कर्ष दिनांक 30 जनवरी से 05 फरवरी 2019 तक

यह भी सच है

राजनीति का हिन्दूकरण, हिन्दुओं का सैनिकीकरण, सैनिकों का आधुनिकीकरण

सादर आमंत्रण

अखिल भारत हिन्दू महासभा, दिल्ली प्रदेश

के तत्वावधान में

बालवीर हकीकत राय

बलिदान दिवस समारोह 2019

हिन्दू वीरों का सम्मान एवं बाल प्रतिभा खोज समारोह

सांस्कृतिक कार्यक्रम	:	स्कूलों के बच्चों द्वारा राष्ट्रवाद पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण
अध्यक्षता	:	श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारत हिन्दू महासभा
विशिष्ट अतिथि	:	श्री मुन्ना कुमार शर्मा, राष्ट्रीय महामंत्री, अखिल भारत हिन्दू महासभा

दिन व तिथि	:	रविवार, 10 फरवरी 2019, बसंत पचंमी
समय	:	प्रातः 10:00 बजे से
प्रसाद व भोजन	:	दोपहर 01:30 बजे
स्थान	:	हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (निकट बिड़ला मंदिर)

आपसे अनुरोध है कि इस राष्ट्रीय व धार्मिक कार्यक्रम में सपरिवार व मित्रों सहित समय से पधारने की कृपा करें।

निवेदक

सुनील कुमार
प्रदेश अध्यक्ष

वीरेश त्यागी
प्रदेश महामंत्री

अखिल भारत हिन्दू महासभा, दिल्ली प्रदेश

कार्यालय : हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली -110001
दूरभाष : 011- 23365138, 23365354
Email : info@akhilbharathindumahasabha.org
akhilbharat_hindumahasabha@yahoo,com
Website : www.akhilbharathindumahasabha.org

कबिरा खड़ा बजार में

चुनावी तराजू पर नपेगा इस बार का अंतरिम बजट

वैसे तो हर बार चुनावी सालके अंतरिम बजट में लुभावने ऐलान सरकारें करतीं रहीं हैं, उसी क्रम में एक फरवरी को मोदी सरकार अपना अंतिम बजट पेश करेगी। चुनाव से सिर्फ दो महीने पहले आने वाला यह बजट अंतरिम होगा। यानी परंपरा के मुताबिक सरकार इसके जरिए चुनाव होकर नई सरकार बनने तक तीन महीनों के लिए होने वाले खर्च का इंतजाम करेगी। परंपरा यह भी है कि जाती हुई सरकार कोई बड़ा नीतिगत ऐलान इस अंतरिम बजट में नहीं करती है। लेकिन सवाल उठ रहा है कि क्या मोदी सरकार इस अंतरिम बजट में आने वाले चुनावों के मद्देनजर बड़े ऐलान कर सकती है, ताकि वोटरों को लुभाया जा सके? कुछ ऐसे ऐलान हैं जिनका लंबे समय से इंतजार किया जा रहा है। सरकार के भीतर इन्हें लेकर चर्चा भी है। बजट में सबसे बड़ा ऐलान आयकर दाताओं को लेकर होने की संभावना जताई जा रही है। कहा जा रहा है कि अंतरिम बजट में आयकर छूट की सीमा ढाई लाख से बढ़ा कर पांच लाख रुपए प्रति वर्ष की जा सकती है। अभी ढाई लाख से पांच लाख रुपए कमाने वालों को पांच फीसदी आयकर देना होता है। यह चर्चा भी है कि वित्त मंत्री अरुण जेटली इस बजट में पेंशनरों को छूट दे सकते हैं। साथ ही आयकर बचत की सीमा भी बढ़ाई जा सकती है। घर खरीदने के लिए गए कर्ज को लेकर भी आयकर में कुछ परिवर्तन किया जा सकता है ।गौरतलब है कि मध्यम वर्ग टकटकी लगा कर इन तमाम राहतों का पिछले पांच साल इंतजार कर रहा है। उसे लग रहा है कि जाते जाते ही सही, लेकिन मोदी सरकार शायद उसे राहत देकर अपनी वापसी का इंतजाम कर ले। दूसरा बड़ा मुद्दा किसानों को राहत देने का है, तीन राज्यों में सरकार गंवाने के बाद बीजेपी को किसानों की नाराजगी का एहसास हुआ है। ऐसे में माना जा रहा है कि किसानों के लिए कुछ नए ऐलान या तो अंतरिम बजट में या उससे पहले हो सकते हैं। इसमें शून्य ब्याज दर पर कर्ज देना और दो लाख रुपए तक के कर्ज के लिए कुछ भी गिरवी न रखना जैसे उपाय शामिल हैं। लेकिन इन तमाम संभावनाओं के बीच सवाल है कि क्या मोदी सरकार वाकई खजाना खोल पाएगी? खुद सरकार ने ही वित्तीय घाटे का लक्ष्य ३.३ प्रतिशत रखा है। जीएसटी में कलेक्शन उम्मीद से कम है। ऐसे में इस लक्ष्य को पूरा करना चुनौती है। एक तरफ परंपरा कायम रखने की चुनौती है तो दूसरी तरफ सत्ता में वापसी का लक्ष्य। बीजेपी के कई नेता कहने लगे हैं कि खजाना भरने से क्या फायदा अगर कोई दूसरी सरकार आकर उसे लुटाए. इससे अच्छा है आप खजाना लुटा कर फिर से सत्ता में आ जाएं। चुनावी साल में मोदी सरकार का यह बजट लुभावना हो न हो, दिलचस्प जरूर होगा ।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2019-20-21
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 30 जनवरी से 05 फरवरी 2019 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।